अमृत विचार
लोक दर्पण
रविवार, 28 जनवरी 2024
www.amritvichar.com

पक्षी संभवत : कुदरत की सबसे मासूम रचना हैं और उनका कलरव उसकी सबसे खूबसूरत आवाज। सृष्टि के आरंभ से मनुष्य व पक्षियों के बीच का रिश्ता बहुत गहरा और आत्मीय रहा है। अपने भोलेपन के अलावा कुछ हद तक हमारे संगीत संस्कारों के निकट होने की वजह से वे हमेशा हमारे दिलों के पास रहे हैं। हमारी सुबहें इनके संगीतमय कलरव से शुरू और हमारे दिन इनके थके हुए शोर के साथ खत्म होते आए हैं। इनके होने भर से हमारे वातावरण में ही नहीं, हमारी संवेदनाओं में भी संगीत बजता है। ये पक्षी जीवन की तमाम जटिलताओं के बीच हमारे लिए भोलेपन का एक भरोसा रहे हैं। विश्व के लगभग सभी देशों के साहित्य, लोकगीतों और लोक कथाओं ने इस खूबसूरत रिश्ते को बेहतरीन अभिव्यक्ति दी है।

मरते पक्षियों का शोकगीत

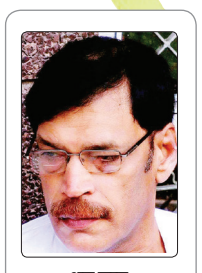

ध्रुव गुप्त
सेवानिवृत्त आईपीएस

हाल के कुछ दशकों में बेतरतीब शहरीकरण और अंध औद्योगिकरण के पागल दौर ने पक्षियों के साथ हमारे रिश्ते को बहुत चोट पहुंचाई है। पेड़ों की लगातार कटाई और हर तरफ कंक्रीट के बेतरतीब उगते जंगलों और कल-कारखानों के धुएं के कारण पक्षी लगातार हमसे दूरी बना रहे हैं। जिन थोड़े से गांवों में अभी कुछ पेड़-पौधे बच रहे हैं,वहां जीवन में थोड़ा-बहुत संगीत भी बचा हुआ है। हमसे दूरी बनाने वाले पक्षियों में सबसे पहले हम अपनी चिरपरिचित गौरैया, कोयल और मैना को ही लें। बड़े शहरों में अब ये छोटे पक्षी शायद ही कहीं दिखते हैं। कस्बों और गांवों में भी उनकी पहले जैसी चहल-पहल नहीं रही। उनके लगातार लुप्त होते जाने या हमसे फासले बना लेने की सबसे बड़ी वजह संचार क्रांति की उपज बेतरतीब रूप से लगे असंख्य मोबाइल टावर हैं। शहरों से लेकर गांवों तक लगातार फैलते इनके जाल ने छोटे पक्षियों को बहुत नुकसान पहुंचाया है। इन टावरों से निकलने वाला रेडिएशन इनके लिए जानलेवा साबित हुआ है। इससे उनके हार्मोनल बैलेंस, प्रजनन शक्ति और स्नायु तंत्र पर हानिकारक असर पड़ा है। कहीं-कहीं एक ही मोबाइल टावर से निकलने वाली कई किस्मों की तरंगों की ओवरलैपिंग के कारण वे अपने प्रवास के मार्ग से भी अक्सर भटक जाते हैं। पक्षी विज्ञानियों के मुताबिक मोबाइल टावरों के कुप्रभाव से दुनियाभर में छोटे पक्षियों की लगभग बयालीस प्रजातियां या तो नष्ट हो चुकी हैं या नष्ट होने के कगार पर हैं।

पक्षियों के बड़े पैमाने पर मरने की जो एक दूसरी बड़ी वजह अभी हाल के एक अध्ययन में सामने आई है। वह बेहद डरा देने वाली है। इंग्लैंड की एक संस्था द्वारा हाल में इंग्लैंड सहित

अठाइस यूरोपीय देशों में पक्षियों की घटती संख्या पर किए गए एक व्यापक अध्ययन और डाटा संग्रह से यह बात सामने आई है कि गहन खेती में अत्यधिक मात्रा में उर्वरकों और कीटनाशकों के इस्तेमाल से पक्षियों की संख्या में भारी गिरावट आई है। यूरोप भर में फैले पचास से ज्यादा शोधकर्ताओं की टीमों ने पाया कि अधिक फसल के लोभ में रासायनिक खादों और कीटनाशकों के प्रयोग के कारण यूरोप में हाल के कुछ वर्षों में 55 करोड़ से ज्यादा पक्षियों की मौत हुई है। यह भी कि पूरे यूरोपीय महाद्वीप में 1980 के बाद सभी प्रकार के जंगली पक्षियों की संख्या में एक चौथाई,लेकिन प्रजातियों में यह गिरावट आधे से अधिक दर्ज की गई है। इस अध्ययन ने दुनियाभर के पक्षी वैज्ञानिकों और पक्षी प्रेमियों की चिंताएं बढ़ा दी हैं।

जलवायु परिवर्तन

जलवायु परिवर्तन आज एक गंभीर वैश्विक समस्या है जिससे करीब-करीब हर देश त्रस्त है। इसका असर हम इंसानों पर ही नहीं, जानवरों, पक्षियों, फसलों और पेड़-पौधों पर भी पड़ रहा है। इसकी वजह से प्रवासी और बड़े पक्षियों की प्रजनन क्षमता पर प्रतिकूल असर पड़ा है। उनके बच्चों के जन्म दर में भारी गिरावट आई है। कुछ पक्षियों में यह गिरावट चालीस फीसदी तक दर्ज की गई है। पक्षियों की इतने बड़े पैमाने पर और लगातार घटती संख्या से हमारा इकोसिस्टम प्रभावित हुआ है। देर-सबेर इसका दुष्प्रभाव हम इंसानों पर भी पड़ना स्वाभाविक है। पड़ भी रहा है। दुनियाभर के वैज्ञानिक पक्षियों के निरंतर हो रहे विनाश से प्रकृति में घट रहे परिवर्तन का अध्ययन कर रहे हैं। इसके कुछ दुष्परिणाम तो हम अपनी आंखों से और अपनी संवेदनाओं के स्तर पर भी देख और महसूस कर सकते हैं। विकास की हमारी बेतरतीब और अंधी दौड़ से प्रकृति से हमारा रिश्ता तो लगातार कमजोर पड़ ही रहा है, पक्षियों से चला आ रहा हमारा सनातन रिश्ता भी टूटा है। पक्षी जिस रफ्तार से खत्म हो रहे हैं अथवा हमसे दूरी बना रहे हैं, उसी रफ्तार से हमारे जीवन से सौंदर्य, भोलापन और संगीत भी गायब हो रहा है।

प्राकृतिक संतुलन सभी के लिए अपरिहार्य

पक्षियों की बढ़ती-घटती संख्या को प्राकृतिक संतुलन या असंतुलन का बैरोमीटर माना गया है। उनकी लगातार कम होती संख्या इस बात का इशारा है कि प्रकृति में गंभीर विक्षोभ पैदा हुआ है। यह सवाल आज हर संवेदनशील व्यक्ति को परेशान कर रहा है कि मासूम पक्षियों को सुरक्षित करने का रास्ता क्या है? बढ़ती जरूरतों के साथ विकास की गति तो तेज होनी ही है,लेकिन विकास और प्रकृति के बीच एक संतुलन की तलाश तो हर हाल में करनी होगी। प्रकृति से ज्यादा से ज्यादा लूटकर अपनी सुख-सुविधा बढ़ाने की आपाधापी में इस संतुलन की परवाह शायद किसी को नहीं है। यह संतुलन हासिल करने के लिए सबसे पहली जरूरत है प्रकृति और पशु-पक्षियों के लिए हमारी संवेदना। यह संवेदना है तो रचनात्मक और मानवीय विकास के रास्ते भी खुलेंगे। इस मामले में हम आदिवासी समाजों से बहुत कुछ सीख सकते हैं। आदिवासी समाजों में मनुष्य और पक्षियों का रिश्ता अब भी कायम है। वहां लोग इनकी पूजा करते हैं और इनसे अपने घर-आंगन और बाग-बगीचों को कलरव से भर देने की याचना करते हैं। अफ्रीका के कुछ कबीलों में जब तक घर के छप्पर और सहन में पक्षियों के संगीत नहीं गूंजे,घर में किसी धार्मिक अनुष्ठान की शुरुआत नहीं होती। उनका विश्वास है कि मरने के बाद भी मांओं का अपनी संतानों से रिश्ता नहीं टूटता। उनकी पवित्र आत्माएं चिड़ियों का रूप धरकर अपनी संतानों की निगरानी करती हैं और शोर मचाकर उन्हें किसी भावी अनिष्ट की चेतावनी भी देती हैं।

जीवन हम इंसानों का हो, पशु-पक्षियों का हो या पेड़-पौधों का, प्राकृतिक संतुलन के लिए सभी अपरिहार्य हैं। प्रकृति से लड़कर नहीं,बल्कि उसके साथ सामंजस्य बिठाकर ही यह जीवन बच सकेगा। हमारी समूची प्रकृति एक दूसरे के बीच गहरे अंतर्संबंधों से जुड़ी हुई है। इसमें से कुछ भी नष्ट हुआ तो बाकी भी विनाश से नहीं बच सकेंगे। समय रहते अगर हम और आप इस बात को नहीं समझे तो यकीन मानिए, चुप बैठकर प्रलय की प्रतीक्षा के सिवा कुछ भी नहीं बचेगा हमारे पास।

अद्भुत अभियंता आर्किटेक्ट बया परिंदा

जगतपति, जगतशिल्पी परमेश्वर की यह दुनिया अनूठे जीव-जंतुओं पक्षियों से आच्छादित और शोभित है। इन सभी के विषय में यदि आप सभी को अवगत कराया जाए तो यह जीवन तो क्या अगले कई जन्म भी थोड़े पड़ जाएंगे। फिर भी अपना प्रयास रहता है कि चिर-परिचित पक्षियों से आपको यथा सामर्थ अवगत कराने का।

आर्य सागर खारी
नोएडा

आज बात करते हैं बया पक्षी की जिसने प्राचीन काल से ही आम लोगों के साथ-साथ, साधु-महात्माओं, पक्षी वैज्ञानिकों, पक्षी प्रेमियों को जितना आकर्षित किया है उतना शायद ही किसी और पक्षी ने किया हो। घरेलू गौरैया चिड़िया से दो तिहाई मिलते जुलते हमशक्ल उसी के खानदान के इस पक्षी की सैकड़ों प्रजातियां विश्वभर में ज्ञात हैं। भारत में इसकी चार प्रजातियां पाई जाती हैं। अपने प्रजनन काल से पूर्व तथा इसके पश्चात नर-मादा बया पक्षी एक जैसे होते हैं। प्रजनन के समय नर की छाती का रंग जो कि पीला होता है अधिक चटक पीला हो जाता है। खेतों चारागाह सड़कों के किनारे यह पक्षी रहता है और चिट् चिट् की आवाज करता रहता है। झाड़ियों में बात करते हैं। बया पक्षी के विशेष हुनर कला कौशल की जिसके लिए यह विश्व विख्यात है शायद ही दुनिया का कोई पक्षी इतना सुंदर तकनीक से युक्त घोंसला बनाता हो। पक्षी क्या मनुष्यों में आज का काबिल से काबिल इंजीनियर आर्किटेक्ट भी शर्मा जाए। नर बया परिंदा ही यह घोंसला बनाता है। बया अपना घोंसला बनाने से पूर्व बड़ी ही बुद्धिमता से घोंसले के निर्माण स्थल का चयन करता है। अधिकांशत बया के घोसले वर्षा काल में जलाशयों में खड़ी वृक्षों पर या तालाबों के किनारे उगे हुए पानी की ओर झुके हुए कटीली वृक्षों जैसे बबूल-बेर ,खजूर-ताड़ आदि पर बनाए जाते हैं। यह घोंसला पानी के किनारे इसलिए बनाते हैं कि कोई जंतु आए तो उसको पानी में गिरने का भय रहे घोसले के आसपास न फटके। इतना ही नहीं पेड़ पर भी पेड़ की पूर्वी दिशा में बया घोंसला बनाता है जिससे कि बरसात के मौसम में दक्षिण पश्चिमी तेज हवा के थपेड़ों से घोंसले की रक्षा रहे और घोंसला तूफान को भी सहन कर लेता है। नर बया ऐसी जगह घोंसला बनाता है जहां अन्य सुरक्षित वृक्ष मौजूद हों। साथ ही घोंसला निर्माण की सामग्री पास ही उपलब्ध हो उसके होने वाले बच्चों के लिए आसपास ही कीट पतंगे अच्छी संख्या में उपलब्ध हो सके। कुछ मामलों में तो यह भी देखा गया है बया ऐसे वृक्षों का चयन करता है,जहां चिड़िया और अन्य काटने वाली किट बड़ी संख्या में रहते हैं जिससे कि इनके अंडे और बच्चे चोरी करने वाले जीवों से सुरक्षित हो जाते हैं,क्योंकि यदि कोई भी जंतु घोंसले के नजदीक जाएगा तो चीटियां अन्य कीट उन पर आक्रमण कर देंगे।

बया के घोंसले में फर्श के साथ-साथ छत भी होती है जिसके कारण इसके अंदर रखे हुए अंडे, अंडे से उत्पन्न बच्चे बाहर से दिखाई नहीं पड़ते। आसमान में विचरण कर रहे शिकारी पक्षी बाज, चील बया के अंडे, बच्चों को नहीं देख पाते। घोंसले में अंडे और बच्चे गरम भी बने रहते हैं। घोसला बनाने से पूर्व ही बया पक्षी निर्माण की पूरी योजना बना लेते हैं जिस शाखा पर घोंसला बनाया जाता है उसकी मजबूती व घोंसले पर भविष्य में पड़ने वाले दबाव का भी आंकलन कर लेते हैं। मनुष्य के द्वारा बनाए गए मकान की नींव नीचे की ओर होती है। जबकि बया के घोसले की नींव ऊपर की ओर शाखा से लगी हुई होती है।

बया पक्षी अपना घोंसला नरम पत्तियों के पतले और लंबे चीरो को आपस में बड़ी कुशलता से बुनकर तैयार करते हैं। बुनाई काफी जटिल होती है। निर्माण के लिए जरूरी चीजें प्राप्त करने के लिए नर बया ऐसे पत्तों का चयन करता है,जो शीघ्र ही पककर पीले होने वाले हो। क्योंकि ऐसी पत्तियां सर्वाधिक मजबूत होती हैं। घोंसले के निर्माण में बया पौधों की टहनी और जड़ों के टुकड़ों का भी इस्तेमाल करता है। यह अपनी चोंच और पंजों की सहायता से पत्तियों के चीरो की बहुत ही मजबूती से गांठ बांध देता है। घोंसले के निर्माण में प्रयोग की जाने वाली पत्तियों के चीरे 20 से 60 सेंटीमीटर लंबे होते हैं। एक घोंसले के निर्माण के लिए 500 चीरो की आवश्यकता पड़ती है अर्थात् चीरे लाने के लिए 500 चक्कर लगाने के बाद बयां एक घोंसला तैयार कर पाता है। यह लाजवाब परिंदा दिन रात मेहनत कर 18 दिन में एक घोंसला तैयार कर पाता है। अपनी थूक से वाटरप्रूफ घोंसले का निर्माण करता है। यही कारण है कि घनघोर वर्षा में पानी की एक बूंद घोंसले में नहीं जा पाती। इस पक्षी की करामात अभी यहीं नहीं रुकती जब आधे घोंसले का निर्माण हो जाता है तो उस अवस्था को "हेलमेट" कहते हैं। आधा घोंसला बनने में आठ दिन लगते हैं। अर्धनिर्मित घोंसले से नर बया पक्षी चिपट कर प्रणय गीत गाता है। प्रभावित होकर मादा बया आ जाती है वह घोंसले का सघन निरीक्षण करती है। मादा जब अर्द्धनिर्मित घोंसले को पसंद कर लेती है तो तत्काल नर बया उसे पूर्ण करने में लग जाता है। "हेलमेट" अवस्था के बाद एक अन्य कक्ष अंडा देने के लिए निर्मित करता है जिस पर चिकनी मिट्टी का लेप भी करता है और प्रवेश द्वार का निर्माण कर घोंसले को पूर्ण कर देता है। प्रवेश द्वार ऐसा बनाता है जिससे अन्य कोई जीव आसानी से उसमें प्रवेश नहीं कर सकता। कभी-कभी जब मादा बया घोसले को पसंद नहीं करती तो नर उस घोंसले को काटकर शाखा से गिरा देता है दूसरे घोंसले के निर्माण में लग जाता है।

घोंसला बनाने के बाद उसकी सजावट का भी इंतजाम करता है अर्थात् इंटीरियर डिजाइनर भी बहुत अच्छा है। छोटे फलों पीले रंग की पंखुड़ियों फूलों का इस्तेमाल करता है। कुछ बया तो घोसले में रात के उजाले के लिए घोंसले की भीतरी दीवारों पर जुगनू को पकड़ कर अपनी लार की सहायता से गीली मिट्टी से चिपका देते हैं।

इतना कुशल कारीगर होने के बावजूद नर बया में एक चारित्रिक दोष भी है यह बहु विवाह करता है। एक से अधिक पत्नी रखता है जब इसकी एक मादा अंडे से रही होती है तो नर पहले घोंसले के पास ही दूसरा घोंसला बनाकर उसमें भी एक मादा बसा लेता है। इस प्रकार यह एक प्रजनन काल में तीन से चार घोंसले बनाकर इतनी ही मादा से अंडे बच्चे पैदा कर देता है।

मदर 2 से 4 अंडे देती है। वर्षा ऋतु में 14 से 17 दिन तक सेती है। मादा ही बेचारी अकेली सारी जिम्मेदारी निभाती है। नर उनके लालन-पालन में कोई योगदान नहीं देता। 17 दिनों के बाद बच्चे उड़ने में सक्षम हो जाते हैं। बया वर्षा ऋतु की समाप्ति पर अपने बच्चों को एक साथ लेकर झुंड में उठ जाती है। फिर कभी उस घोंसले में वापस नहीं आती। वह घोसला अन्य पक्षियों चमगादड़ मकड़ियों कीट पतंगों के आवास के तौर पर काम आता है। यह जीव बया के घोंसले में शरणार्थी की तरह रहकर सर्दी में अपना और अपने बच्चों का बचाव करते हैं। भूमि पुत्र किसानों की भी दोस्त है बया। बयां की बस्तियां वृक्षों पर सामूहिक रूप में रहती हैं,जहां यह धान-ज्वार -मक्का आदि खेतों में नुकसान पहुंचाने वाले लाखों कीटों का दिन में खात्मा करती हैं। 12 से 15 वर्ष इस परिंदे की आयु होती है,जो इसके शरीर के हिसाब से ठीक-ठाक है। जब ईश्वर का बनाया हुआ जीव-जंतु-पक्षी जगत इतना अनूठा है तो वह ईश्वर कितना अनूठा होगा?

अलविदा मासूम परिंदों

वर्ष 2023 पृथ्वी पर अब तक जीवित रहे 10 परिंदों के लिए उनकी पृथ्वी माता के आंचल से विदाई का वर्ष बन गया। गुआम व हवाई दीप के 10 परिंदों को इस वर्ष पृथ्वी से विलुप्त घोषित कर दिया गया है।

साल दर साल कितने ऐसे कथित नव वर्ष आएंगे कितने ही जीव जंतु यूं ही विलुप्त होते रहेंगे। जीवों का यह विलुप्ति करण चमड़ी के रंग के आधार पर अपने को श्रेष्ठ मानने वाले अंग्रेज,जर्मन,फ्रेंच,पुर्तगाली और स्पेनिश आदि नागरिक व राष्ट्र समूह के उपनिवेशीकरण का दुष्परिणाम है। अंग्रेज आदि औपनिवेशिक शक्तियों ने अपने अधीन दीपों देशों पर वन्यजीवों का शिकार कर व जंगलों को काटकर द्रुत गति से विनाश किया। भारत के शेरों,बाघों व गैंडों का जितना शिकार अंग्रेजों ने किया है उतना शिकार विश्व में किसी जानवर का नहीं हुआ। मॉरीशस दीप के डोडो पक्षी को तो डच लोग मार कर खा गए। आज उस भारी शरीर के जमीन पर रेंगने वाले पक्षी का केवल जीवाश्म मिलता है। मानव जनित वन्यजीवों के विनाश की यह सूची बहुत लंबी है। सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली कहावत की तर्ज पर यही लोग वन्यजीवों के संरक्षण को लेकर ग्लोबल संस्था बनाकर फंड जनरेट कर अपने आप को जीव संरक्षण वादी घोषित करते हैं,लेकिन अपने पूर्वजों के काले कारनामो पर माफी नहीं मांगते। अंग्रेजों ने महासागरीय टापूओं पर अपने उपनिवेश बसाएं अपने साथ बीमारियों वायरस बैक्टीरिया लेकर गए तो अन्य ऐसे जीव जंतुओं को जहाज पर लाद कर ले गए,जो उसे देश या टापू पर मौलिक नैसर्गिक तौर पर नहीं पाए जाते थे। वह जीव-जंतु उसे टापू पर रहने वाले मूल जीवों के विनाश का कारण बने। भगवान ने प्रत्येक देश दीप या उपमहाद्वीप के लिए अलग-अलग प्राणियों को उसकी जलवायु आवास के हिसाब से निर्मित कर छोड़ा है। हम यह शिकायत नहीं कर सकते कि भारत में कंगारू क्यों नहीं पाए जाते और अमेरिका में एशियाई शेर क्यों नहीं मिलते। मनुष्य ही इसका केवल अपवाद है कि वह किसी भी जलवायु परिवेश में रह सकता है या रहने के लिए अनुकूलन कर सकता है। उदाहरण के लिए न्यूजीलैंड एक करोड़ से कम मानव आबादी का टापू देश है जिसकी क्रिकेट टीम बहुत ही प्रोफेशनल मजबूत मानी जाती है,उस देश का एक पक्षी है कीवी वह पक्षी सर्प से बचाव नहीं कर सकता,क्योंकि वह सर्प से बचने का अभ्यसत नहीं है क्यों नहीं है? तो इसका जवाब यह है न्यूजीलैंड ऐसा आज भी इकलौता देश है जिस पर सांप नहीं पाए जाते। ऐसे में यदि वहां कोई सांपों को ले जाकर छोड़ दे तो वहां के कीवी जैसे पक्षी पूरी तरह विलुप्तिकरण के संकट के दायरे में आ जाएंगे। न्यूजीलैंड ऑस्ट्रेलिया अंग्रेजों के मूल देश नहीं थे। अंग्रेजो ने वहां के मूल निवासियों को नष्ट करके अपने उपनिवेश स्थापित किया। यही स्थिति अमेरिका महाद्वीप के साथ रही। वन्यजीवों के विनाश जैव विविधता की बर्बादी के न्यायार्थ गठित कोई निष्पक्ष अंतर्राष्ट्रीय अदालत बैठे तो उसकी ही पहली सुनवाई में उपलब्ध जैव विविधता के नाश से संबंधित वैश्विक आंकड़ों के आधार पर औपनिवेशिक चरित्र के देश नि :संदेह दोष सिद्ध हो जाएंगे। अंग्रेज .जर्मन,फ्रेंच,पुर्तगालियों पर आर्थिक क्षतिपूर्ति का दंड लगे तो यह देश अपने आप को बेचकर भी क्षतिपूर्ति की भरपाई नहीं कर पाएंगे। फलों में अमरूद व पपीता बोलचाल में कमीज और कमरा शब्द भारत में पुर्तगालियों की ही देन है। इन औपनिवेशिक देनों को को अच्छी देन के रूप में प्रचारित किया जाता है, लेकिन यह देन थी ही नहीं अंग्रेज फ्रेंच पुर्तगाली आदि अपनी सुविधा भोग विलास के लिए अपने साथ अपनी इन वस्तुओं को लेकर आए थे और अपनी भाषा शब्दकोश का परित्याग कैसे कर सकते थे? वह तो उनके व्यवहार के लिए थी, हमने उन्हें अपनाकर उनकी देन के तौर पर प्रचारित कर दिया।

पक्षी क्यों करते हैं कलरव

दीर्घ समय तक पक्षी विज्ञानियों में यह मान्यता रही कि पक्षी अपना शत प्रतिशत परस्पर संवाद शारीरिक भाव भंगिमा से ही करते हैं। जैसे पूछ का हिलाना,पंखों का फड़फड़ाना चोंच से अन्य किसी वस्तु को कुरेदना आदि आदि। वही न्याय दर्शन या प्रमाण शास्त्र के भाष्यकार महर्षि वात्स्यायन ने प्रत्यक्ष, अनुमान आदि प्रमाणों के लक्षण प्रकरण में यह वचन कहा है कि "एवमेभी : प्रमाणैर्देवमनुष्यतिरश्चा व्यवहारा : प्रकल्पन्ते" अर्थात् शब्द आदि प्रमाणों का प्रयोग न केवल मनुष्य करते हैं मनुष्येत्तर अन्य जीव-जंतु,पशु-पक्षी भी करते हैं। ऋषियों का ज्ञान मल्टीडिसीप्लिनरी होता है। मनुष्य व्यक्त वाणी बोलता है, जबकि पकड़ जाए तो जो रास्ते को जानता है रास्ते के विषय में उसका कथन शब्द प्रमाण माना जाता है,लेकिन क्या यह शब्द प्रमाण पक्षी जगत में भी लागू होता है। जी हां यह निस्संदेह लागू होता है। आधुनिक पक्षी विज्ञान के विभिन्न शोधों ने इस पर मोहर लगाई है। पक्षी भी अपनी विविध स्वर यंत्र से उत्पन्न ध्वनियों के माध्यम से परस्पर संवाद करते हैं। इन ध्वनियों को परस्पर व्यवहार में लाकर पक्षी अपना जीवन जीते हैं। गौरैया-बुलबुल सात भाई तोता जैसे पसेरी फॉर्म पक्षियों का वर्ग सॉन्ग बर्ड का परिवार इसमें सर्वाधिक माहिर है। ऋतुओं के विविध परिवर्तन को पक्षी सूक्ष्म संकेतों के माध्यम से सबसे पहले भांप लेते हैं। प्रकृति में होने वाले परिवर्तन के प्रति पक्षी सर्वाधिक संवेदनशील होते हैं। यही कारण है भारत के परिपेक्ष में माघ मास के आते ही वसंत ऋतु के आगमन से पूर्व ही कोयल आदि चहकने लगती हैं। ऐसे समझिए जब पक्षियों का नाद सवेरे होते ही अधिक सुनाई देने लगे तो समझिए शीत ऋतु की अब विदाई हो रही है। ऋतुराज वसंत के आगमन की भूमिका तैयार हो रही है जिसको पक्षी तैयार करते हैं। पक्षी अपना उत्सव हमसे पूर्व हमसे दीर्घ अवधि तक मनाते हैं। पक्षियों के धन्नात्मक संवाद को समझते हैं। बुलबुल,गौरैया और बया आदि चिड़ियां छोटी अवधि के लिए जब नरम मधुर शांत ध्वनि निकालती है तो उसे 'संपर्क कॉल' कहते हैं। यह कॉल अपनी प्रजाति के पक्षी को अपने आसपास बुलाने के लिए अपनी उपस्थिति दर्शाने के लिए या भोजन की खोज पूर्ण होने पर छोड़ी जाती है। अपने से विजातीय किसी हानिकारक जानवर कुत्ता,बिल्ली,नेवला और सांप आदि का खतरा होने पर पक्षी 'अलार्म कॉल' निकालते हैं,यह बेहद कर्कश पतली तेज होती है। इसमें माधुर्य का अभाव रहता है। इतना ही नहीं पक्षी विज्ञानियों ने अपने विविध शोध में पाया है। यदि शिकारी कुत्ता है तो अलग ध्वनि पक्षी निकालते हैं। यदि बिल्ली है तो अलग बंदर के लिए अलग अलार्म काल निकालते हैं। तीसरी स्थिति में यदि कोई गैर हानिकारक पक्षी है,लेकिन अपनी प्रजाति का नहीं है तो उसे भगाने के लिए क्षेत्रीय कॉल निकल जाती है। यह भी कर्कश होती है,लेकिन धीमी होती है। पक्षियों के संवाद का चौथा तरीका है ,संसर्ग के लिए वसंत के आगमन पर या वर्षा ऋतु में गाकर नर, मादा या मादा नर को रिझाने के लिए पक्षी गाते हैं। इसे बर्ड सॉन्ग कहते हैं पक्षियों का एक ही गीत नहीं गाते हैं एक ही पक्षी दर्जनों से लेकर सैकड़ो गीत गा सकता है। अलग-अलग प्रजातियों के पक्षी इसमें माहिर होते हैं।

प्राचीन साहित्य की सार्वभौम विशेषता

प्रो. जगदीश्वर चतुर्वेदी
कोलकाता

मार्क्सवादी नजरिए से प्राचीन साहित्य की यह सार्वभौम विशेषता है कि इसमें मनुष्य के उच्चतर गुणों का सबसे सुंदर वर्णन मिलता है। उच्चतर गुणों के साथ ही साथ मानवीय धूर्तताओं, काइंयापन और वैचारिक कट्टरता के भी दर्शन होते हैं। देवता की सत्ता के बारे में विविधतापूर्ण अभिव्यक्ति मिलती है। प्राचीन साहित्य की महान कालजयी रचनाएं ऐसे समाज में रची गईं,जो विकास की दृष्टि से पिछड़ा हुआ था।

सवाल यह है कि सामाजिक तौर पर पिछड़े समाज में श्रेष्ठ कृतियों और कला रूपों, दर्शन के बेहतरीन ग्रंथों का जन्म कैसे हुआ? ये कृतियां आज भी सैंकड़ों साल बाद हमें आनंद क्यों देती हैं? इस सवाल पर सबसे पहले कार्ल मार्क्स ने '1857-1858 की आर्थिक पांडुलिपियां' नामक कृति में विचार किया, उसने लिखा 'कठिनाई यह समझना नहीं है कि यूनानी कला और महाकाव्य सामाजिक विकास के कतिपय रूपों से कैसे जुड़े हुए हैं। कठिनाई तो यह है कि वे अब भी हमें सौंदर्यात्मक आनंद प्रदान करते हैं और उन्हें अब भी कुछ मामलों में मानक तथा अलभ्य मॉडल माना जाता है।' हिंदी में जिन मार्क्सवादी या प्रगतिशील आलोचकों के द्वारा तुलसीदास की आलोचना के दौरान समसामयिक समाज को उनकी रचनाओं में खोजने की कोशिश की गई है,उन्हें कायदे से प्राचीन साहित्य,खासकर महाकाव्य विधा के संदर्भ में लिखी गई कार्ल मार्क्स और मिखाइल बाख्तिन की आलोचना को गंभीरता से पढ़ना चाहिए जिससे वे कुछ नया सीख सकें।

कार्ल मार्क्स ने '1857-58 की आर्थिक पांडुलिपियां' कृति की भूमिका में लिखा है' जहां तक कला का संबंध है,यह सुविदित है कि उसके कुछ शिखरों का समाज के आम विकास के साथ कदापि मेल नहीं है,न उनका इसके भौतिक आधार के,मानो उसके संगठन के अस्थिपंजर से ही मेल है।' मार्क्स ने जब ये बातें कही थीं तो उनके सामने समाज की अपरिपक्व अवस्था थी, वे प्राचीन साहित्य के संदर्भ में ये बातें कह रहे थे।

प्राचीनकालीन महाकाव्यों के बारे में मार्क्स का कहना था, ये हमारे सामाजिक बचपन की रचनाएं हैं। जिस तरह बच्चे का भोलापन आनंद देता है,सब समय मोहक लगता है। उसी तरह ये रचनाएं भी प्रत्येक काल में मोहक लगती हैं, आनंद देती हैं। मार्क्स ने लिखा कि कुछ बच्चे कुशाग्रबुद्धि होते हैं, कुछ ठस दिमाग के होते हैं। क्या हमारे प्रगतिशील आलोचकों ने भारतीय परंपरा में ठस और कुशाग्रबुद्धि बच्चों के बारे में कभी सोचा? तुलसीदास ठस बुद्धि का बच्चा है या कुशाग्रबुद्धि का?

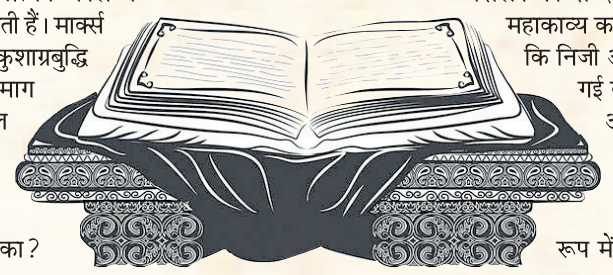

क्या वाल्मीकि की रामायण, महाभारत, कालिदास के महाकाव्य, तुलसी का रामचरित मानस अपने युग के यथार्थ को व्यक्त करते हैं? जी नहीं, समसामयिकता के साथ महाकाव्य का विधा के नाते कोई संबंध नहीं होता।

रामचरित मानस महाकाव्य है और महाकाव्य के विधागत, संरचनात्मक तत्व इस पर भी लागू होते हैं। इस संदर्भ में मिखाइल बाख्तिन के नजरिए का काफी महत्व है। बाख्तिन के अनुसार 'अतीत की आदर्शीकृत स्मृतियों' के कारण महाकाव्य में लेखक के समय और विषय के बीच बड़ा अंतराल पाया जाता है। यह अंतराल ही कृति एवं समाज में अंतराल पैदा करता है। इस तरह की कृतियों की बुनियाद राष्ट्रीय अनुश्रुति है।

महाकाव्य की कहानी संपूर्ण कहानी होती है। चरित्र अमूमन वीर होते हैं। यह ऐसी कहानी है जिसमें रद्दोबदल संभव नहीं है। मिखाइल बाख्तिन के अनुसार विधागत तौर पर इसके तीन संरचनात्मक लक्षण हैं-(1) महाकाव्य का विषय राष्ट्रीय महिमामंडित अतीत होता है और गेटे और शिलर की शब्दावली में 'निरपेक्ष अतीत', (2) महाकाव्य का स्रोत राष्ट्रीय अनुश्रुति होती है, न कि निजी अनुभव और उसके आधार पर की गई कल्पना (3) महाकाव्य के संसार और समसामयिकता, अर्थात् वाचक (रचयिता और उसके श्रोताओं के बीच एक) से विशाल दूरी होती है। संक्षेप में महाकाव्य विधा के रूप में अतीत के बारे में काव्य रूप है। इसमें रचनाकार की दृष्टि के केंद्र में अलभ्य अतीत होता है जिसे श्रद्धानत होकर स्वीकार करने के अलावा और कोई विकल्प नहीं होता।

महाकाव्य का वाचक और श्रोता एक ही काल में एक मूल्य परक सोपान क्रमिक स्तर पर स्थित होते हैं। जबकि महाकाव्य में चित्रित पात्रों का संसार बिल्कुल दूसरे ही मूल्यपरक-कालिक स्तर पर स्थित होता है। इन दोनों के बीच बड़ा अंतराल होता है। महाकाव्यीय मानव किसी भी किस्म की वैचारिक पहल से वंचित होता है, पात्र और रचयिता सभी वंचित होते हैं, महाकाव्यीय संसार में केवल एक समेकित,पूर्णतः निरुपित एकमात्र विश्व दृष्टिकोण होता है, जो नायकों, पात्रों, रचयिता और श्रोताओं सभी के लिए अनिवार्य और निर्विवाद होता है। महाकाव्यीय मानव भाषायी पहल से भी वंचित होता है। महाकाव्यीय संसार एक समेकित और एकमात्र तैयार भाषा जानता है। यह एकभाषी संसार है।

बाख्तिन के नजरिए से यदि रामचरित मानस को देखा जाए तो अनेक रोचक निष्कर्ष सामने आएंगे। बाख्तिन के नजरिए का महत्व इस अर्थ में भी है कि हमारे यहां कृति की अंतर्वस्तु की आलोचना खूब हुई है, किंतु हमने कभी महाकाव्य के विधागत वैशिष्टय को केन्द्र में रखकर विस्तार या संक्षेप में विचार नहीं किया है। महाकाव्य के बारे में हमारे सभी आलोचकों की राय यही है कि महाकाव्यात्मक कृतियों में सामयिक समाज झांकता है। यह नजरिया महाकाव्य की विधागत संरचनावादी सैद्धांतिकी के लिहाज से अवैज्ञानिक है। कायदे से महाकाव्य की विधागत विशेषताओं और अंतर्वस्तु का मिलाकर अध्ययन किया जाना चाहिए। विधा रूप के साथ मिलाकर यदि महाकाव्य की आलोचना लिखी जाएगी तो उसके परिणाम अंतर्वस्तुवादी आलोचना से अलग आएंगे। महाकाव्य की अंतर्वस्तुवादी आलोचना अधूरी और अवैज्ञानिक आलोचना है।

कविता

आवाजें

आवाजें कहीं गुम नहीं होती हैं
वे सब घूमती रहती हैं हमारे चारों तरफ
जरा ध्यान से सुनो सब यहीं हैं
कोई कहीं नहीं गया

लौट आती हैं सब किसी न किसी रूप में,
मेरी नानी की आवाज मेरी माँ,मामा, मौसी में
दादी की मेरी बुआ,चाचा और पिता में
अक्सर नाना की कहानियां भी सुनती हूं।
पिता की आवाज हर खुशी में सुनती हूं
ये तो हैं घर भीतर की वो सारी आवाजें
जिनको सुनने की अभ्यस्त हूं।

आजकल कुछ अजीब सी आवाजें सुनाई देती हैं
जो नित शोर बनकर घेरती हैं मुझे
पहचानना चाहती हूं पर पहचान पाना मुश्किल है
बच्चे,बूढ़े,युवा,आदमी,औरतें,पशु पक्षी..
और
बचाए जाने की गुहार लगाते लंबे मोटे दरख्त..उफ्फ
सब एक साथ इन आवाजों में
शामिल हैं।

ये आवाजें हमारी बुनियाद हैं
इनका खो जाना, जीवन के खो
जाने जैसा है
बोलती और चीखती आवाजों में
फर्क पहचानना होगा
आवाजें कहीं गुम नहीं होती
वे सब घूमती रहती हैं हमारे चारों
ओर!!

डॉ. अवंतिका सिंह
स्वतंत्र लेखिका, लखनऊ

ठीक नहीं है

पानी पर ठहराव बिछाकर
आग जलाना ठीक नहीं है।
विस्फोटक सामग्री में ही
शांति पाठ का भी निवास है,
बढ़े व्यक्तिगत कार्य
सिद्धि में सबका सामूहिक
प्रयास है।
अंगारों पर शीत जमाकर
राह बनाना ठीक नहीं है।

संबंधों का पालन पोषण भी
अपना अलगाव कर रहा।
जीवनरूपी अलमारी में
बस अनुमानित आय भर
रहा।
गुच्छों पर पत्थर चलवाकर
पुन: मिलाना ठीक नहीं है।

ठीक नहीं है सभी सवालों
का निर्धारित हल हो पाना।
कुछ प्रश्नों का हल होता
है प्रश्न-प्रश्न पर प्रश्न
बनाना।
जगमग पर अंधियारा
रखकर दिया दिखाना
ठीक नहीं है।

विवेक कुमार
शाहजहांपुर

बाल कविता

सूरज बाबू अलसाये हो,
या कोहरे से घबराये हो।
सुबह शाम में रहो नदारद,
किससे इतने शरमाये हो ?
सर्द हवा से डरते हो क्या,
चढ़ी धुंध से लड़ते हो क्या?
टप-टप गिरें ओस की
बूंदें, गागर मटकी भरते
हो क्या?
पाले से जब पड़ता पाला,
दफ्तर में लग जाता ताला।
दिनभर आसमान से
गायब, थर-थर कांपे
सूरज लाला।
कभी इन्हें भी आंख
दिखाओ, तेज धूप का जरा
बढ़ाओ।
आलस छोड़ बढ़ो अब
आगे, जग जीवन के प्राण
बचाओ।।

नरेन्द्र सिंह नीहार
नई दिल्ली

गीत

सिर्फ अपने हाथ पर चलता रहा हूं
मैं किसी की भीड़ से गुज़रा नहीं हूं
मूक संबोधन बहुत मुझको मिले हैं
लोग कसते व्यंग्यमय आवाज़ भी हैं
एक अपने पथ स्वयं की चाहना में
रूठने से लोग लगते क्यों सभी हैं
सुन स्वयं आलोचना चलता रहा हूं
मैं किसी भी चीड़ सा बहरा नहीं हूं
वक्त की सहमी सिसकती सी
हवाएं
मानसूनी मानचित्र मांगती हैं
चित्र जो मैंने बनाए सांस के थे
आज दीवारें उन्हीं को टांगती हैं
मुक्त हूं मैं मुक्त ही केवल रहूंगा
मैं किसी के नीड़ का पहरा नहीं हूं।

गोपाल विनोदी
जनवादी कवि, बरेली

कहानी

मनोहर

"गुड मॉर्निंग दद्दा!" उसका पहला संबोधन पढ़े लिखो जैसा था,लेकिन अगली बात कहने से पहले आदतन मुंह से निकलने वाली गालियां असलियत खोल देती थी। गालियां भी ऐसी की सुनकर पुलिस वाले भी शरमा जाए। कॉलोनी के शरीफ बाशिंदे ऐसे बदजुबान आदमी से कतराकर निकलते थे। उसे आदत थी दूसरों के फटे में टांग घुसाने की। पति-पत्नी की अनबन हो या बूढ़े मां-बाप की नाकद्री, जवान लड़कों की हरकतें हो या लड़कियों के अफसाने। मनोहर को सब पता रहता और यह बातें कहीं भी उगल देता। अपना काम तो कुछ था नहीं जरूरत पर जिसने बुलाया उसी के साथ चल पड़े। पुश्तैनी मकान में बरसों से जमे किराएदार जो कुछ दे देते उसी से पैतालीस वसंत देख चुके अविवाहित मनोहर का काम चल जाता। पिता ने अपने जीते जी लड़के का घर बसाने का बहुत प्रयास किया,लेकिन ऐसे फक्कड़ से कौन भला अपनी बेटी ब्याह देता?

अतुल मिश्र
डिप्टी मैनेजर (इफ्को) बरेली

बिल न चुकाने के कारण मनोहर की बिजली काट दी जाती थी। इससे इस पॉश कॉलोनी की साख गिरती थी। सोसाइटी के अध्यक्ष गोयल साहब उसका जर्जर होता मकान औने-पौने दाम में लेकर उस पर अपना नया बंगला बनवाने की हसरत रखते थे। कोरोना की दूसरी लहर में जब सभी अपने घरों में दुबके हुए थे, मनोहर की "गुड मॉर्निंग" खामोशी को तोड़ देती थी। जिसे भी दवा-दारू की जरूरत पड़ी या बोलने बतियाने को साथी की कमी हुई मनोहर उपलब्ध हो गया। सब ने समझाया- "ऐसे मत घूमो तुम्हें कोरोना हुआ तो क्या करोगे?" पर वो तो बेताल की तरह घर-अस्पताल से लेकर श्मशान तक नाचता रहा। बेहतर इम्यूनिटी का असर हो या आत्मिक शक्ति? मामूली बुखार से ज्यादा उसे कुछ न हुआ।

कुछ दिनों से गोयल साहब उदास रहने लगे थे। उनकी गुर्दे की बीमारी बिगड़ती ही जाती थी। अब तो दिल्ली के डॉक्टरों ने किडनी ट्रांसप्लांट का बोल दिया था।

"गुड मॉर्निंग दद्दा!" मनोहर की आवाज सुनकर अपने गेट पर अनमने से बैठे गोयल साहब ने उसकी ओर देखा।

"आओ मनोहर चाय पियोगे?" प्रश्न में निहित निमंत्रण को स्वीकार कर वह खाली कुर्सी पर बैठ गया। इधर-उधर की बकबक चालू कर दी। इसराइल मुसलमान को मार रहा है। नगर निगम में लूट मची है। ज्ञानेंद्र की बीवी अपनी सास को खाना नहीं देती। सहसा गोयल साहब बोल पड़े "अब हम नहीं बचेंगे। यह गुर्दे की बीमारी हमारे प्राण लेकर रहेगी।" "फिकर नॉट दद्दा! अब कि तुम अपने साथ मुझे दिल्ली ले चलना। मैं डॉक्टर से बात करूंगा। ये डॉक्टर तो पैसे के भूखे हैं। तुम्हें कुछ नहीं होगा" मनोहर की बात सुनकर कारोबारी गोयल साहब के दिमाग में विचार आने लगे।

इसी कॉलोनी के मिश्रा जी बैंक में मैनेजर हैं। वैसे तो बड़े शरीफ इंसान हैं,पूजा-पाठ व दान-धर्म में खूब खर्च करते हैं, हमेशा टिप-टॉप बनकर रहते हैं,लेकिन एक दिन

बुटीक वाली भाटिया मैडम की कातिल नजरों से घायल हो बैठे। मैडम बैंक में लोन लेने आई थी,लोन के साथ-साथ मैनेजर का दिल भी ले उड़ी। प्रेम की डबल इंजन गाड़ी वंदे भारत एक्सप्रेस की तरह दौड़ पड़ी। अब भला इतनी महत्वपूर्ण जानकारी मनोहर को न हो सके? असंभव था। तब से उसके चाय-पानी का खर्च मिश्रा जी खुशी से देते हैं। पिछली सहालग में गर्म कपड़े का एक सूट भी सिलवाकर दिया है। उनका दांपत्य जीवन निर्बाध है।

कॉलोनी का चौकीदार होमसिंह टेंपो की टक्कर से चोटिल हो गया था। बाएं पैर की हड्डी चकनाचूर हो गई। डॉक्टर ने ऑपरेशन और प्लास्टर का लंबा खर्च बताया। गरीब चौकीदार बिस्तर पर लग गया। कॉलोनी वाले कुछ देने को तैयार नहीं थे,लेकिन मनोहर ने उसके इलाज के वास्ते प्रत्येक घर से एक-एक हजार रुपये देने का फरमान जारी कर दिया। सब जानते थे कि ऐसे मामले में मनोहर कैसी उद्दंडता कर सकता है। नानुकुर के बीच सब को यह 'गुंडा टैक्स' भरना पड़ा। जैसे भी हुआ एक गरीब का ऑपरेशन हो गया। इधर कुछ दिनों से मनोहर किसी को दिखाई नहीं दिया था। हाई स्टेटस पड़ोसी बिना किसी काम के उसका पता क्यों करते? मिश्रा जी के विवाहेतर संबंध की सूचना बैंक वालों ने उसकी पत्नी तक पहुंचा दी, फिर क्या था? पति-पत्नी में खूब झगड़ा हुआ। पुलिस दरोगा की बेटी उनकी पत्नी घर छोड़कर मायके चली गई।

गोयल साहब दिल्ली से किडनी ट्रांसप्लांट करवाकर आज लौट आए हैं। ऑपरेशन सफल रहा, महंगे इलाज के बलबूते अब भले चंगे हैं। मनोहर को आज चौकीदार के घर की ओर जाते देखा गया। चौकीदार के पैर की हड्डी जुड़ गई है। वह छड़ी के सहारे चलने लगा है। मनोहर का चेहरा पीला और शरीर कमजोर हो गया। "कहां रहे इतने दिनों तक मनोहर भैया? बिस्तर पर पड़े-पड़े हम तुम्हारी ही राह देखते रहे।" चौकीदार ने बहुत कुछ कहना चाहा।

"गुड मॉर्निंग दद्दा" मनोहर की धीमी आवाज निकली। उसने अपना सब हाल सुनाना शुरू किया।

गोयल साहब के दो बेटों में बड़ा वाला कारोबार संभालता है और छोटा बेंगलुरु में इंजीनियर है। दोनों शादीशुदा हैं और खूब कमाते हैं। अपना काम बखूबी करते हैं,लेकिन बूढ़े पिता को किडनी देकर अपना भविष्य खतरे में कैसे डाल दें? मनोहर जब उनके साथ दिल्ली गया तो सब हाल समझा, उनकी डूबती सांसे न देख सका और बिना कोई देर किए अपनी किडनी ट्रांसप्लांट करवा दी। डॉक्टरों से अपना परिचय गोयल साहब के बड़े बेटे के रूप में दिया। ऐसा झूठ बोलना उसे मुश्किल न था और बदले में उसे कुछ नहीं चाहिए। पता नहीं गैरों के लिए इतना इमोशनल कोई कैसे हो सकता है?

समीक्षा

एक राष्ट्र-एक सम्राट-एक भावना का अभ्युत्थान

अजीत प्रताप सिंह की पुस्तक "एक राष्ट्र-एक सम्राट-एक भावना" इस किताब की आत्मा है। यह कहानी कहानी नहीं,बल्कि इतिहास है धनहीन विष्णु गुप्त की, जो चणक पुत्र होने के कारण चाणक्य भी कहलाए और विष्णु गुप्त के कुलहीन शिष्य चन्द्र, मगध सेनापति मौरिय पुत्र चन्द्र गुप्त मौर्य की। कूटनीति में कुटिल होने के कारण चाणक्य कौटिल्य भी कहलाए। नंद की धन लोलुपता कारण मगध नरेश को नाम मिला धनानंद। उसी धनानंद के प्रतिकार और महान कहे जाने वाले यवनराज अलक्षेन्द्र (सिकंदर) के प्रतिरोध के अभ्युदय और उत्थानम की गाथा है, "अभ्युत्थानम" यह गाथा आगे बढ़ती है विष्णु गुप्त के कुलहीन शिष्य चन्द्र, मगध सेनापति मौरिय पुत्र के कथानक से, जो अपने कुलहीन परिचय को अपने गुरु के 'गुप्त' कुलनाम से परिपूर्ण करता है और आगे चलकर उतने विस्तृत भूखंड पर अपने साम्रज्य की स्थापना करता है जितनी विस्तृत भूमि भारतवर्ष दुबारा फिर कभी नहीं देख पाया। यहां तक कि मुगलों और ब्रिटिश काल तक में भी नहीं।

मशहूर उपन्यासकार यशपाल ने अपनी प्रसिद्ध कृति "दिव्या" के लिए लिखा है "दिव्या" इतिहास नहीं ऐतिहासिक कल्पना मात्र है, "अभ्युत्थानम्" के लिए यह बात कही जा सकती है 'न तो यह काल्पनिक-इतिहास है,न ही ऐतिहासिक-कल्पना,वरन एक 'ऐतिहासिक साहित्य' या 'साहित्यक इतिहास' इस पुस्तक की उचित परिभाषा होगी। यह पुस्तक स्मृतियों का पुनर्जागरण है। लेखक अजीत ने बहुत ही प्रवीणता से उस देशकाल-परिस्थिति की आत्मा को इस पुस्तक में उतारकर रख दिया है। इसका कथानक अत्यंत उत्तम है और उसकी सुंदरता अक्षुण्ण है। कुल मिलाकर यह पुस्तक आपको रोमांच एवं उत्सुकता में भींचकर गौरवान्वित करने वाले एक इतिहास का निचोड़ प्रस्तुत करती है।

एक सुंदर कृति की खूबी यही है कि उसे पढ़ते हुए आप अपनी सारी स्मृतियों-विस्मृतियों को कथानक और तथ्य से जुड़ता हुआ पाएं। उसकी चेतन-अचेतन कल्पनाएं भी इतनी खूबसूरत हों कि सहसा अविश्वसनीय होने के बावजूद भी वे आपके मन मंदिर में मूर्त रूप लेने लगें। कौतुहल-उत्सुकता एवं रहस्य-रोमांच से भरते हुए कथा आपको स्वतःस्फूर्ति आगे की ओर लेकर बढ़ती ही जाए।

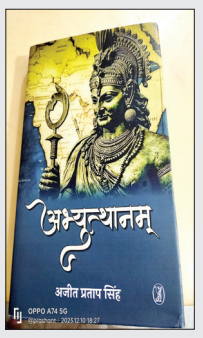

पुस्तक समीक्षा–अभ्युत्थानम्
लेखक–अजीत प्रताप सिंह
प्रकाशक– वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
संस्करण– 2023
मूल्य– 899 रुपए
पृष्ठ संख्या– 398
समीक्षक –डॉ. प्रशांत द्विवेदी

व्यंग्य

सर्दी रे सर्दी

समझ में नहीं आ रहा है कि इतनी सर्दी का क्या करूं? इस सर्दी का न ही अचार डाला जा सकता है,न ही इसकी भजिया बनाकर खाया जा सकता है और न ही इसे धूप में सुखाकर स्टोर करके रखा जा सकता है ताकि गर्मियों में काम में लाया जा सके। न यह सर्दी जीने दे रही है, न मरने का ऑप्शन दे रही है। न चैन से कमाने दे रही है,न चैन से खाने दे रही है। हम जैसे मिडिल क्लास वालों के पास पहले ही बहुत ज्यादा ऑप्शन नहीं रहता है और इस सर्दी में और ज्यादा सारे ऑप्शन खत्म कर दिए हैं।

ऐसा लग रहा है कि सूर्य भगवान इंसानों से उसकी करतूतों के लिए बदला ले रहे हैं। अब क्या किया जाए हम इंसानों की करतूत ही ऐसी है। सारी प्रकृति कुपित है। अगर सूर्य भगवान भी कुपित हो जाए तो कौन सी बड़ी बात है। वरना बिना पैसे खर्च किए इतनी फुल एसी कौन चालू करता है। ऐसा लग रहा है सूर्य देव भी राजनीति कर रहे हैं और हम आम जनता बिना नीति के मारे जा रहे हैं। भगवान मरना तो हम लोगों को एक दिन है,लेकिन बिना किसी नीति के मत मारिए कोई नीति और नियम हो तो कतार से हम लोग आए। वरना अभी धरती वाले जनसंख्या से जूझ रहे हैं। यही समस्या आपको भी झेलनी पड़ जाएगी। उसके बाद आप कहेंगे कि इन धरती वालों के पास कोई अनुशासन और संस्कार नाम की चीज नहीं है वैसे सच में नहीं है।

रेखा शाह
बलिया

सर्दी इतनी है कि नहाने का नाम सुनते ही सर्दी लग जा रही है। पानी को देखते ही पूरा भूमंडल कांपने लग रहा है। एक लोटे पानी में से अगर गलती से दो-चार बूंद भी हाथ पर पानी गिर जा रहा है तो यमराज के पास जाने के सपने आने लग रहे हैं। अगर गलती से कहीं पर यह गाना भी बजते हुए सुन ले रहे हैं कि धरती नदिया पवन के झोंके,कोई सरहद न इन्हें रोक टोके, इस गाने को सुनते ही ठिठुरन और टांगे कांपने लगती है। सच में आपको कोई रोक-टोक नहीं रहा है। आप बिना भव बाधा के आइए और अपना स्थान ग्रहण कीजिए भगवान जी कुछ विचार कीजिए। कुछ लोगों ने सुझाव दिया कि रूम हिटर का इस्तेमाल करो। भला तीन-चार डिग्री पर रूम हीटर भी काम करता है। वह भी इस हाड़कपाऊ ठंड में कांपने लगता है,उसको भी ठंड लगने लगती है। लगता है जैसे वह ऊष्मा दे नहीं रहा है,बल्कि हम लोगों से ही ऊष्मा ले रहा है। रूम हीटर आखिर इस्तेमाल किया जाए तो कैसे किया जाए? बिजली का बिल पीटी ऊषा के जैसे दौड़ने लगता है। पूरा शरीर गर्म होने के बजाय बिजली का बिल देखकर दिमाग गरम हो जा रहा है। अगर ठंड भगाने और बिल की प्रतियोगिता की जाए तो बिल ज्यादा तेज भागता हुआ निकलेगा। इसीलिए यह हम मिडिल क्लास वालों के बस की बात नहीं है यह लग्ज़री आइटम है। ऊपर से यह भी डर लगता है कहीं ठंड भगाते-भगाते बिजली का बिल इतना न आ जाए कि बिजली का बिल चुकाने में घर द्वार ही न बिक जाए। अब ठंड के चक्कर में कोई बेघर तो होने से रहा।

बस आम जनता के पास एक यही सुविधा थी कि आपकी रोशनी सबको बराबर मात्रा में मिलती थी। यहां पर किसी का कोई गणित नहीं चलता था। पशु पक्षी सबके लिए समानता थी। चाहे कोई अमीर हो या गरीब, कोई बड़ा नेता हो या सड़क पर खड़ा कोई फकीर, सबको यही चीज एक बराबर मिलती थी। कृपया इससे वंचित मत कीजिए गुहार और पुकार है कि है सूर्य देव दर्शन दीजिए जनता अब आकुल व्याकुल हो चुकी है।

कथा

बॉस का आलम

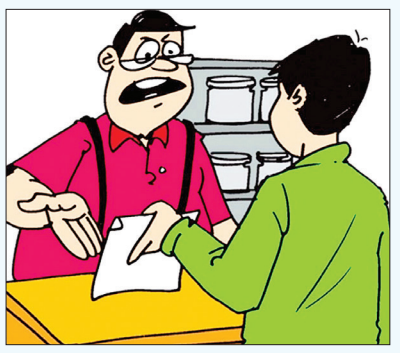

विजय समय का पाबंद,कर्तव्यनिष्ठ और मेहनती था,लेकिन बॉस की आंख की किरकिरी था। विजय का बोलना, उसका चलना, उसका पहनना, बॉस को बिल्कुल भी पसंद नहीं था। पंद्रह दिन पहले ही विजय ने अपनी छोटी बहन की शादी की थी,घर में सब खुश थे। उस दिन विजय के बहनोई भी घर आए हुए थे, विजय ने सोचा कि जल्दी से लंच करके, बहनोई को अपना ऑफिस दिखाकर, उन्हें बस में बैठा देगा। दोपहर के लगभग डेढ़ बजे थे, शालीनता व प्रेम से मुस्कराते हुए विजय अपने बहनोई के साथ ऑफिस पहुंचा। दो मिनट ही हुए थे बात करते हुए कि अचानक ऑफिस का चपरासी आया और कहा कि "साहब आपका लेटर है। बड़े साहब ने दिया है,रिसीव कर लीजिए"। विजय आश्चर्य चकित था,बॉस का बंद लिफाफा देखकर, जिस पर लिखा था 'गोपनीय' अर्थात् कॉन्फिडेंशियल,जिसे देखते ही चेहरे की मुस्कराहट धीमी पड़ गई,आवाज में भी भारीपन आ गया। लिफाफा खोलकर जल्दी से पत्र पर नजरें घुमाई जिसे पढ़कर चेहरे पर उदासी छा गई जिसमें लिखा था कि 'तुम दिए गए कार्य के लिए अपना दायित्व नहीं निभा रहे हो'। विजय पूरी कोशिश कर रहा था, अपने चेहरे पर खुशी लाने की ताकि बहनोई साहब को इस पत्र की कुछ भी भनक न लगे,लेकिन चेहरे पर आए गम और खुशी को कौन नहीं पढ़ सकता? बहनोई साहब ने पूछ ही लिया आखिरकार कि "विजय भैया इस पत्र में क्या लिखा है? चेहरे पर उदासी क्यों है? क्या हुआ? अचानक इतने उदास क्यों"?

डा. बी.पी.सिंह
भाकृअनुप

विजय ने स्थिति को संभालते हुए और चेहरे पर बनावटी मुस्कराहट के साथ कहा, "कुछ नहीं बॉस ने गोपनीय कार्यों को पूरा करने के लिए अति आवश्यक मीटिंग बुलाई है"। बहनोई साहब ने तुरंत कहा,"कोई बात नहीं, आप मीटिंग में जाएं, बस-स्टैंड मैं खुद ही चला जाऊंगा, आप चिंता न करें"। विजय ने जवाब दिया,"मीटिंग तो कल है, आज केवल दस्तावेज ही तैयार करने हैं। पहले मैं आपको बस-स्टैंड लेकर चलूंगा, आपको विदा करूंगा, फिर ऑफिस आकर दस्तावे तैयार कर लूंगा"।

विजय ने बहनोई साहब को शगुन का लिफाफा दिया और बस में बैठाकर विदा कर दिया,लेकिन उसका दिल और दिमाग बॉस के गोपनीय पत्र से हट नहीं रहा था। मन ही मन में बॉस को कोसे जा रहा था कि जैसे-तैसे तो मां-बाप ने पढ़ाया, इतना काम करने के बाद भी बॉस ने जीना दुश्वार कर रखा है। ऑफिस में आने का मन ही नहीं करता है। आखिर चाहता क्या है बॉस, नौकरी छोड़ दूं या उसकी चापलूसी करता रहूं। खुद सिफारिश व चमचागिरी से कुर्सी तक आया है। तरह-तरह के सवाल उसके दिमाग में उमड़ रहे थे। इन सब बातों के चलते विजय भूल गया था कि वह इस समय स्कूटर से सड़क पर चल रहा है। इतने में ही एक कार स्कूटर से टकराई और विजय सड़क पर गिरकर घायल हो गया। चोट गंभीर थी,राहगीरों ने घायल विजय को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कर घर वालों को इत्तला कर दिया।

अब तक विजय के एक्सिडेंट की खबर उसके ऑफिस तक भी पहुंच गई थी, तुरंत ही सभी लोग अस्पताल पहुंच गए। ऑफिस के सहयोगी और परिवार जन दुखी और हैरान थे विजय की चोट को देखकर,कह रहे थे कि "विजय तो बहुत ही धीमी गति से और आराम से स्कूटर चलाते हैं,एक्सिडेंट कैसे हो सकता है"? इतने में एक ऑफिस के व्यक्ति ने चिल्लाकर कहा कि एक्सिडेंट कैसे नहीं होगा? "नए बॉस ने एक महीने से परेशान करके रखा है इन्हें, आज भी एक गोपनीय पत्र 'मेमो' दिया है,उसे लेकर बहुत परेशान थे"। इतने कर्मठ व्यक्ति को भला, बॉस कैसे परेशान कर सकता है। अस्पताल के एक कोने में खड़ा बॉस ये सब बातें सुन रहा था। बॉस को अपनी गलती का एहसास हो रहा था,लेकिन गलती मांगे तो किससे मांगे,जो होना था वह तो हो गया उसे पलटा नहीं जा सकता। बॉस सोच में था कि जिस विजय को 'मेमो' दिया, वह तो 'कोमा' में है। वह 'मेमो' भी किसी के उकसाने पर दिया था। मैं तो समझ ही नहीं पाया विजय की अच्छी कार्यशैली को और उसके कुशल व्यवहार को। बॉस विजय के परिवार से मिलकर माफी मांगकर और की गई गलती का बोझ दिल में लेकर अस्पताल से अपने ऑफिस चला गया। विजय की पत्नी पहले से ही बीमार चल रही थी,अस्पताल में उनकी देखभाल करने वाला बेटे के सिवा कोई और नहीं था। बेटी गर्भवती होने के कारण ससुराल से नहीं आ सकती थी। बेटा दूर शहर से बी.टेक कर रहा था। पिता की देखभाल एवं उपचार की खातिर बेटे का एक सेमेस्टर खराब हो गया जितनी जमा पूंजी थी,वह सब विजय के इलाज में खर्च हो गई। शुक्र है रिश्तदारों और मित्रों का जिन्होंने विजय के परिवार की मदद करने में किसी भी प्रकार की कोई कसर नहीं छोड़ी। खैर उपचार के कुछ महीनों बाद विजय ने भी स्वस्थ होकर ऑफिस में अपनी डयूटी जॉइन कर ली, कहते है न " जिसका कोई नहीं उसका तो खुदा है यारों", और यहां ईश्वर-रूपी रिश्तेदार और मित्रगण भी विजय के साथ थे।

इजिप्ट की प्रसिद्ध वैली ऑफ किंग्स

शैलेन्द्र प्रताप सिंह
से.नि., पुलिस महानिरीक्षक

अगले दिन सुबह इडफू मंदिर देखकर क्रूज पर आया और इस समय क्रूज अपने गंतव्य लक्सर पर आकर खड़ा हो चुका है। पूरा दिन क्रूज में ही अड्डे बाजी करते गुजरा। नील नदी के दो स्तरों से क्रूज का सफर देखा। पहले क्रूज को एक ऐसे रास्ते में डाला गया जहां पानी दोनों तरफ गेट बनाकर नियंत्रित था। क्रूज के पीछे का गेट,जिधर से वह आ रहा था,क्रूज गुजरने के बाद बंद कर दिया गया। वह करीब 25 फिट नदी के आगे के स्तर से ऊपर था। अब आगे वाले गेट से पानी छोड़ा गया जैसे बांध का पानी छोड़ा जाता है। चूंकि यह पानी पीछे लगे गेट के बंद होने से नियंत्रित था,इसलिए उसका स्तर घटने लगा। जल्दी ही वह और साथ ही क्रूज उस स्तर पर पहुंच गया जिस पर उधर नील नदी का स्तर था और फिर वह गेट खोलकर क्रूज पास करा दिया गया। इसी तरह वापसी में जल स्तर बढ़ाकर उसका स्तर ऊंचा किया जाएगा। यह सब देख समझ कर अच्छा लगा।

तीन दिन से नील नदी के आसपास मंडरा रहा था। सच तो यह है कि विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यताएं बड़ी-बड़ी नदियों की घाटियों में पनपीं। मिस्र की सभ्यता का विकास नील नदी की घाटी में मेसोपोटामिया की सभ्यता का दजला और फरात की घाटी में, भारत की सभ्यता का सिंधु नदी घाटी में और चीन की सभ्यता का ह्वांगहो और यांगसी क्यांग की घाटी में हुआ। इस नदी घाटी की सभ्यता से ही "कांस्य युगीन सभ्यता" की शुरुआत होती है। मनुष्य की सभ्यता का विकास नदियों की घाटियों में ही इस कारण संभव हुआ। क्योंकि नदियों से मनुष्य को अपनी आवश्यकताओं के लिए पानी उपलब्ध हुआ। नदियों के पास की उपजाऊ जमीन मिली,नदियों के पास की नरम मिट्टी उसे झोपड़ियों के लिए मिट्टी मिली,खाने के लिए मछलियां मिली,पानी पीने के लिए आए हुए जंगली पशुओं को शिकार बनाने में सहूलियत हुई, यातायात में सुविधा मिली। इन्हीं कारणों से विश्व की प्राचीन सभ्यताओं का विकास नदी घाटियों में हुआ। अफ्रीका महाद्वीप के पूर्वी भाग में प्रवाहित होने वाली नील नदी विश्व की सबसे लंबी नदी है। इसकी लंबाई 6650 किलोमीटर है। नील नदी अफ्रीका की विक्टोरिया झील से निकलती है। नील नदी का जल निकासी बेसिन 11 देशों को समाहित करता है। मिस्र की प्राचीन सभ्यता का विकास इसी नदी की घाटी में हुआ है। प्राचीन मिस्रवासी नील नदी के दोनों किनारों पर जलोढ़ मिट्टी की एक संकीर्ण पट्टी पर बस गए थे। इसके आगे बंजर जमीन और ऊबड़-खाबड़ चट्टानें थीं,उसके बाद शुष्क रेगिस्तान था। ऐसा माना जाता है कि मनुष्य ने लगभग दस हजार से शुरू कर नील नदी के किनारे बसते रहे।

मिस्र (नील नदी) की सभ्यता सुमेरियन सभ्यता की ही तरह बहुत प्राचीन है तथा लगभग 5500 वर्ष पुरानी है। फराओ राजाओं की यह सभ्यता 31 ईपू तक चली जब रोमन साम्राज्य ने इस पर विजय प्राप्त कर मिस्र को अपने राज्य में मिला लिया। नील नदी के किनारे की जमीन अत्यंत उपजाऊ होने के कारण इस सभ्यता को फलने-फूलने का उचित अवसर मिला। फराओ राजाओं के शासन काल में इस क्षेत्र की उल्लेखनीय प्रगति हुई।

सुबह तक पूरा ग्रुप क्रूज से चेक आउट कर लक्सर भ्रमण के लिए बस में आ बैठा। जल्दी तैयार होने के लिए दिन की शुरुआत सुबह जल्दी शुरु करनी होती थी। इस यात्रा में दिन की सारिणी (शेड्यूल) टाइट हैं,पर जरूरी भी है। कम समय में पूरा देश देखना है,समझना है। तमाम जगह जाना है और वह भी बहुत कम समय में।

नील/ मिस्र सभ्यता होमो सेपियंस की शुरुआती सभ्यता है और जितने बहुदेववादी अवशेष इजिप्ट में हैं। वे सब कमाल के हैं और मिस्र वाले उन्हें संभाले हुए हैं। उन्हीं में एक वैली आफ किंग्स है जहां 18 वें राजवंश से बीसवें राजवंश के 500 वर्षों के दौरान फैरों / राजाओं के मकबरे टीलों के पत्थरों को काटकर बनाए गए थे।

हम सब वैली और किंग्स जाने के लिए शहर की ओर नील नदी पार कर वैली आफ किंग्स की तरफ़ चले। लक्सर करीब 1500 वर्षों तक ईसा पूर्व में इजिप्ट की राजधानी रही थी ,पर विशेष बात यहां यह लगी कि नील नदी के किनारे बसे होने के कारण पर्यटकों का बहुत बड़ा केंद्र है। नदी के किनारे की शाम पेरिस की शाम की तरह बहुत ही रूमानियत होती है। रास्ते भर लक्सर के आउटर इलाके में हो रही खेती ने मन मोह लिया। काली मिट्टी थी। सुगर केन तक पैदा हो रही थी।

बात इजिप्ट की प्रसिद्ध वैली ऑफ किंग्स की। हुआ यह कि फैरो तुताखानुम का मक़बरा वर्ष 1922 में खुदाई विशेषज्ञ हॉवर्ड कार्टर द्वारा खोजा गया जिसमें सोने के रथ,सिलखड़ी के शानदार बर्तन,फर्नीचर और तुताखानुम के व्यक्तिगत सामान मिले। यह महत्वपूर्ण खोज थी। साफ था कि फैरो के मकबरों में तमाम सामान मिलता है। 1979 में यह युनेस्को विश्व विरासत स्थल घोषित हुई। इसी तर्ज पर फिर प्राचीन राजगद्दी के 1548-086 बीसीई के मध्य के शासकों के 63 कब्र पहाड़ी पर खोदे गए। इसी को आज वैली आफ किंग्स कहते हैं। हम रामेसेस 9 और मेरेनप्ताह का मकबरा के अंदर तक गए। अंदर की दीवारों पर की गई चित्रकारी कमाल की थी। गेट के अंदर प्रवेश पर अंदर का माहौल मकबरा नहीं वरन पूरा फैरो का निवास स्थान था। सब कुछ आश्चर्य चकित करता हुआ।

उसके बाद पास ही हत्शेपसट मंदिर गए,जो 18 वे राजवंश के पांचवें फरोह थुतमोस द्वितीय की पत्नी थी,जिन्होंने रानी रेग्नेंट के रूप में 1479 से 1458 बसी में इजिप्ट में राज किया और बहुत ही योग्य और सफल फरोह मानी गई। हत्शेपसट ने इजिप्ट को आर्थिक मजबूती दी। व्यापारिक गतिविधियों को महत्ता दी। हत्शेपसट ने पुरुष शासकों की तरह खुद को फरोह घोषित कराया और स्टैच्यू और चित्रकारी में पुरुषों की तरह दाड़ी लगवाई, अपना पुरुष शरीर भी बनवाया।

उसके बाद सड़क मार्ग से न आकर बोट से नील नदी पार कर नील के पश्चिमी किनारे पर स्थित होटल में लंच हुआ। नदी में ही उनका भव्य स्वीमिंग पूल, और नदी में भी एक होटल।

लंच के बाद कर्णक मंदिर गए,भव्यता में दुनिया का सबसे शीर्ष मंदिर जिसमें कई मंदिरों का समूह है। इस मंदिर को बनाने की शुरुआत 2000 बीसी से शुरू होकर 31 बीसी में रोमनों के आने तक चली। यह मुख्यतः भगवान अमून का मंदिर है। वर्ष 1979 यह भी यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल में घोषित हुआ।

ओसिरिस के साथ अमुन-रा इजिप्ट के शीर्ष और इजिप्टियन साम्राज्य के मुख्य देवता है। अमुन-रा पवन देव और सूर्यदेव के मिश्रित रूप हैं। दोनों भगवानों की शक्तियों के साथ बहुत ही ताकतवर देवता के रूप में सामने आए। वह 11 वें राजवंश के कार्यकाल (2081-1938 बीसी) में राजवंश के रक्षक बने। यह मंदिर उस स्थान पर भी बना जहां फौरो/राजाओं के राज्याभिषेक होते थे ।

इसके बाद हम सब लक्सर मंदिर गए। यह भी एक विश्व धरोहर स्थल है। यह 1392 में बनाया गया था और यह भी अमुन सहित मुत और खोनसु देवताओं को समर्पित है। इसका निर्माण फैरो अमेनहोटप तृतीय के कार्यकाल में शुरू हुआ और फैरो तुतनखामुन के कार्यकाल में पूर्ण हुआ। यह मंदिर भी बहुत विशाल है।

मेरा ख्याल है कि इस यात्रा का यह आखिरी मंदिर था जिसे देखा गया,अगले दिन गीजा के पिरामिड देखने जाना था,पर जो बात इन तमाम विश्व धरोहर मंदिरों को वाकई महत्वपूर्ण और विश्व धरोहर बनाती है,वह है इनकी प्राचीनता। सभी ईसा पूर्व के है और उस समय इनकी भव्यता,इनकी वास्तुकला, इन मंदिरों को विशेष बनाती है। उल्लेखनीय है कि ज्यादातर जगहें/ मंदिर ईसा से भी एक हजार पूर्व के हैं। मैंने गूगल बाबा को तंग किया तो उन्होंने बताया कि हिंदुस्तान का सबसे पुराना स्मारक अशोक (तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व) के कार्यकाल का सांची का स्तूप है।

खाना खजाना

ड्राई फ्रूट्स बॉस्केट

प्रीतम कोठारी
फूड ब्लॉगर

सूखे मेवे की मिठाइयां अपने समृद्ध और लाजवाब स्वाद के कारण भारत में बहुत लोकप्रिय हैं। काजू कतली से लेकर ड्राई फ्रूट के लड्डू तक, ये मिठाइयां बेहद हेल्दी और स्वादिष्ट होती हैं। सूखे मेवों से विभिन्न प्रकार की मिठाइयां बनाई जाती हैं, जो स्वादिष्ट होने के साथ-साथ देखने में भी लाजवाब होती हैं।

सामग्री

- एक कप काजू
- आधा कप चीनी
- एक चम्मच घी
- एक चम्मच ग्लूकोज सिरप
- आधा कप मिक्स डॉयफ्रूट्स
- चौथाई कप पानी

बनाने की विधि

सबसे पहले काजू को पल्स मोड पर पीस लें। फिर इसे एक छलनी से छान लें। अब एक कड़ाही में चीनी और पानी डालें। इसमें एक अच्छा सा उबाल आने दें। अब इसमें पिसा हुआ काजू मिक्स करें और घी मिलाकर धीमी आंच पर पकाएं। मिक्सचर जब कड़ाही के किनारे छोड़ने लगे तब आंच बंद कर दे और मिक्सचर को हल्का सा ठंडा करके एक प्लास्टिक सीट पर डाल दे। अब इसे हाथ पर थोड़ा सा घी लगाकर अच्छे से मसल लें और बास्केट का शेप दे दें। अब इस पर चाहे तो चांदी का वर्क लगा दें। स्टफिंग के लिए ड्राई फ्रूट को बारीक-बारीक कटकर ले और उसके अंदर एक चम्मच ग्लूकोज सिरप मिला दें या फिर थोड़ा सा मिल्कमेड डालकर अच्छे से मिक्स कर लें। अब तैयार स्टफिंग को बास्केट के अंदर भर दें। हमारी शानदार ड्राई फ्रूट बास्केट बनकर तैयार है।

हम सबने यदि गौर किया होगा तो समझ सकते हैं कि हमारा शरीर हमसे कुछ कहता है। कभी हम उसकी सुन लेते तो कभी अपने मन की करते,क्योंकि हर हाल में अपना सुख हमें प्रिय होता है। फिर चाहे उसके बाद पछताना ही क्यों न पड़े। वही करते जो हम करना चाहते हैं। उसके बावजूद समय-समय पर हमारा शरीर हमें रोकता-टोकता रहता है। जब भी उसे लगता कि हम जो भी कर रहे हैं वह सही नहीं,तब वह किसी न किसी तरीके से हमें यह समझा ही देता है कि हमें यह नहीं करना चाहिए। इसके परिणाम गलत हो सकते हैं।

सुनें क्या कहता है आपका शरीर

इंदु सिंह
स्वतंत्र लेखिका

हमारा शरीर भीतर स्थित आत्मा से चलायमान होता है, जो बेहद पवित्र व संवेदनशील होती है। कहीं भी उसे कुछ नकारात्मक या उसके स्वभाव के प्रतिकूल दिखाई देता है तो वह हमें सचेत करने का संकेत देती है जिसे यदि हमने मान लिया तो कोई बात नहीं और यदि हमने फिर भी वह किया जो नहीं करना था तो ज्यादातर परिस्थितियों में हमको एक बुरा अनुभव होता है।

दरअसल हमारा शरीर आत्मा का केवल एक बाहरी आवरण है,जो किसी रिसीवर की तरह अपने आसपास के वातावरण व व्यक्तियों से तरंगें ग्रहण करता है। जिन्हें आत्मा समझती और उसके अनुरूप ही प्रतिक्रिया व्यक्त करती है। आपने अक्सर देखा होगा कि केवल अपनी जिव्हा के वशीभूत होकर यदि हम आवश्यकता से अधिक भोजन करते तो हमारा पेट हमें इशारा करता कि उसमें जगह नहीं है। परंतु अपने लालच में हम उसको खा लेते हैं। फिर भले बाद में पेट दर्द करे या सर चकराए या उल्टी आ जाए,लेकिन उस वक्त तो हमें उसका स्वाद लेना ही सबसे ज्यादा जरूरी लगता है। इस चटोरेपन की आदत की वजह से हमें बहुत सारी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। यहां तक कि अस्पताल भी जाना पड़ता,लेकिन हम इसे छोड़ नहीं पाते,क्योंकि हमने भोजन को अपनी कमजोरी बना लिया है,जो यदि न मिले तो हमको कमजोरी महसूस होने लगती है। जबकि हमारा शरीर अपने भीतर इतना कुछ संचित कर के रखता कि उस भीतर की ऊर्जा से हमारा काम चल सकता है।

इसी तरह यदि हम कोई काम अपने शरीर की प्रकृति के विपरीत जाकर करते हैं तो वह जरूर हमको संदेश देता हैं। जिसे सुनना आना भी जरूरी अन्यथा लगातार उसे नजरअंदाज किए जाने पर वह आवाज दब जाती है।

आज के समय में हर कोई जानता कि शराब, बियर, सिगरेट, गुटखा, ड्रग्स, कोल्ड ड्रिंक्स, फास्ट फूड, पैक्ड स्नैक्स, सस्ते फूड आइटम्स, मिठाई, आइसक्रीम आदि सेहत के लिए मीठे जहर हैं। फिर भी केवल अपनी खुशी या स्वाद के लिए हम इन्हें खरीदते हैं। इनका सेवन करते समय भी हमारे भीतर से आवाज आती कि ये सब सही नहीं है,पर हमको पसंद हो तो फिर हम किसी का कोई तर्क या दलील नहीं सुनते और जो करना वही करते हैं। नतीजा कि हम बीमार पड़ जाते या स्थायी रूप से किसी रोग के मरीज बन जाते हैं। फिर भी क्यों लोग उस जहर को खाना चाहते,जो उनको मार सकता है। क्या थोड़े से जुबान के आनंद के लिए अपने शरीर पर ऐसा अत्याचार सही है?

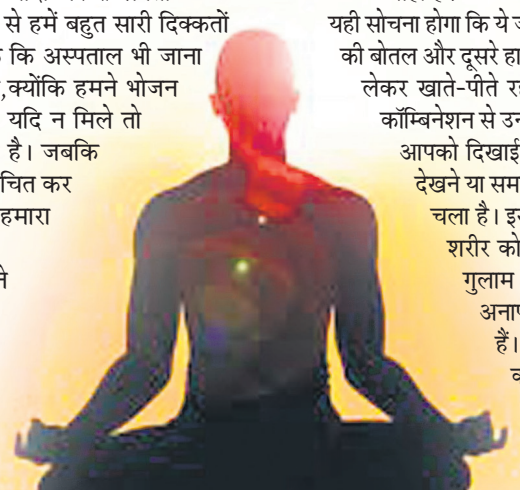

यही सोचना होगा कि ये जो आजकल युवा एक हाथ में कोल्डड्रिंक की बोतल और दूसरे हाथ में पिज्जा या बर्गर या पेटिस या नूडल्स लेकर खाते-पीते रहते हैं,वो नहीं जानते कि इन दोनों के कॉम्बिनेशन से उनके पेट में कैसा विष बन रहा हैं। यह सब आपको दिखाई नहीं देता या आप इतने व्यस्त कि इसे देखने या समझने की फुर्सत नहीं परंतु यह सब आम हो चला है। इसके पीछे की वजह यही कि हमने अपने शरीर को सुनना छोड़ दिया और केवल जीभ के गुलाम बने जा रहे जिसके चक्कर में कुछ भी अनाप-शनाप केवल पैकिंग देखकर खरीद रहे हैं। उसके पीछे लिखी हुई न्यूट्रिशन वैल्यूज को नहीं पढ़ रहे हैं। ऐसे में पढ़े-लिखे होने का कोई अर्थ नहीं,ज्यादा समझदार तो ग्रामीण हैं,जो घर में पकाकर ताजा भोजन या नाश्ता करते हैं।

साप्ताहिक राशिफल

-पं.मनोज कुमार द्विवेदी
ज्योतिषाचार्य, कानपुर

मेष — इस सप्ताह सोचे हुए काम समय पर पूरे होंगे और उनके द्वारा किए गए परिश्रम की अपेक्षा से अधिक फल मिलेगा। कार्यक्षेत्र में अनुकूलता बनी रहेगी। आप के कार्यों की प्रसंशा होगी और आपको किसी कार्य विशेष के लिए सम्मानित भी किया जा सकता है।

वृष — इस सप्ताह सेहत, संबंध और अपने कामकाज में विशेष सावधानी बरतनी की आवश्यकता रहेगी। आपकी छोटी सी भूल आपके लिए परेशानी की वजह बन सकती है। नौकरीपेशा लोगों कोभूलकर भी अपना काम किसी दूसरे के भरोसे नहीं छोड़ना चाहिए अन्यथा बनते काम भी बिगड़ सकते हैं।

मिथुन — यदि इस सप्ताह अपने समय और ऊर्जा का प्रबंधन करने में कामयाब हो जाते हैं तो उन्हें उनकी अपेक्षा से अधिक सफलता और लाभ मिल सकता है। आपको स्वजनों का पूरा सहयोग और समर्थन मिलेगा। कार्यक्षेत्र में अनुकूलता बनी रहेगी। सीनियर के सहयोग से आप अपने टारगेट को समय से पूर्व ही पूरा करने में कामयाब हो जाएंगे।

कर्क — यह सप्ताह मिलाजुला रहने वाला है। सप्ताह की शुरुआत में कार्यों में आने वाली अड़चन के कारण आपका मन थोड़ा खिन्न रहेगा। इस दौरान छात्रों का मन पढ़ाई से उचट सकता है। युवा वर्ग गलत संगति के शिकार हो सकते हैं। इस दौरान खान-पान नियंत्रित रखें और अपनी सेहत के साथ किसी भी प्रकार खिलवाड़ न करें।

सिंह — यह सप्ताह शुभता लिए है। इस सप्ताह आपको हर कदम पर सफलता और सम्मान की प्राप्ति होगी। कार्यक्षेत्र में आपके काम का डंका बजेगा। इष्टमित्रों के सहयोग से आपकी अधिकतर योजनाएं सफल होंगी और आपके यश में वृद्धि होगी। सप्ताह के पूर्वार्ध में लंबी दूरी की यात्रा संभव है। यात्रा सुखद और संपर्कों को बढ़ाने वाली साबित होगी।

कन्या — इस सप्ताह किसी भी कार्य को करते समय जल्दबाजी से बचना चाहिए। नियम-कानून का उल्लंघन न करें और न ही किसी भी कार्य को करते समय शार्टकट अपनाएं अन्यथा आपको आर्थिक एवं शारीरिक कष्ट झेलना पड़ सकता है। यदि आप व्यवसाय से जुड़े हैं तो आपको कागज संबंधी कार्य समय पर पूरे करके रखना उचित रहेगा।

तुला — यह सप्ताह बेहद शुभ रहने वाला है। सप्ताह के प्रारंभ में आपको करियर-कारोबार के सिलसिले में लंबी या छोटी दूरी की यात्रा करनी पड़ सकती है। यात्रा शुभ और मनचाहे परिणाम को देने वाली साबित होगी।

वृश्चिक — यह सप्ताह मनचाहे परिणाम देने वाला साबित होगा। आप जिस भी कार्य का जिम्मा उठाएंगे उसमें आपको मन मुताबिक सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होगा। सप्ताह के प्रारंभ में करियर-कारोबार से जुड़ी शुभ सूचना मिलेगी जिससे आपका मन प्रसन्न रहेगा। कारोबार के सिलसिले में की जाने वाली यात्राएं मनचाहा लाभ दिलाने वाली साबित होंगी।

धनु — यह सप्ताह जीवन में बड़े अवसर लेकर आने वाला है। व्यक्ति विशेष की मदद आपकी योजनाएं पूरी होती नजर आएंगी। कार्यक्षेत्र में अनुकूलता बनी रहेगी। आप पर आपके सीनियर और जूनियर दोनों ही पूरी तरह से मेहरबान रहेंगे तो वहीं आप अपनी बुद्धि और विवेक से अपने विरोधियों की चाल को नाकाम करेंगे।

मकर — यह सप्ताह थोड़ा आपाधापी भरा रह सकता है। सप्ताह के प्रारंभ में आपको छोटे-छोटे कार्यों को पूरा करने के लिए अधिक भागदौड़ करनी पड़ सकती है। हालांकि सप्ताह के मध्य में इष्टमित्रों की मदद से आपके कामकाज में थोड़ी गति आएगी।

कुंभ — यह सप्ताह सकारात्मक और शुभ फल को प्रदान करने वाला साबित होगा। इस सप्ताह आप अपने संगी-साथी और प्रियजनों के साथ हंसी-खुशी समय बिताएंगे। आपके सोचे हुए काम समय पर मन मुताबिक तरीके से पूरे होंगे। सप्ताह के पूर्वार्ध में कार्य विशेष में मिलने वाली बड़ी सफलता से आपका मन प्रसन्न रहेगा।

मीन — यह सप्ताह शुभता लिए हुए है। इस सप्ताह आपको पूर्व में की गई कड़ी मेहनत का मीठा फल प्राप्त होगा। सप्ताह के प्रारंभ में किसी कार्य विशेष के पूर्ण होने पर मन में प्रसन्नता बनी रहेगी। इस दौरान आप कार्यक्षेत्र में अपने कार्यों को बेहतर तरीके से करते नजर आएंगे। आपके कार्यों की प्रशंसा होगी।

वर्ग पहेली (काकुरो)

काकुरो पहेली वर्ग पहेली के समान हैं, लेकिन अक्षरों के बजाय बोर्ड अंकों (1 से 9 तक) से भरा है। निर्दिष्ट संख्याओं के योग के लिए बोर्ड के वर्गों को इन अंकों से भरना होगा। आपको दी गई राशि प्राप्त करने के लिए एक ही अंक का एक से अधिक बार उपयोग करने की अनुमति नहीं है। प्रत्येक काकुरो पहेली का एक अनूठा समाधान है।

काकुरो 67

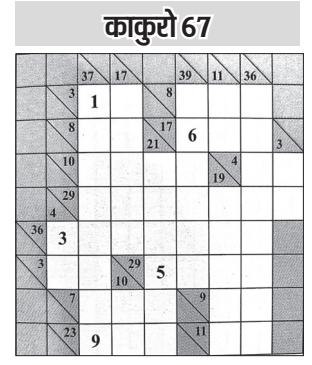

काकुरो 66 का हल

बिहू: एक सूत्र में पिरोने वाला सामाजिक पर्व

भारतीय पर्व कहीं न कहीं कृषि से जुड़ी तमाम परंपराओं और संस्कृतियों की ओर ही इंगित करते हैं, बिहू भी इससे अछूता नहीं है। बोहाग बिहू अगर बुवाई से संबंधित है तो कती बिहू यानी कि कोंगाली बिहू फसल के संरक्षण की ओर इशारा करता है। वहीं भोगाली बिहू यानी कि माघ बिहू फसलों के उत्सव के प्रतीक रूप में जाना जाता है।

पंकज मिश्र 'अटल'
आसाम

इस बिहू पर्व में तमाम परंपराओं में भारतीय और असमिया संस्कृति के साथ ही आस्ट्रो-एशियाटिक, हिंद-आर्यन और वर्मी-चीन परंपराओं तथा संस्कृतियों को महसूस भी कर सकते हैं, इसके पीछे मुख्य कारण यही है कि पूर्वोत्तर में बहुत सी जातियां और जनजातियां प्रवजन के तौर पर भी आकर यहीं पर केवल बस ही नहीं गईं हैं अपितु साथ में अपनी संस्कृतियों को भी लेकर आईं हैं और शायद यही कारण है कि भले ही इस पर्व के साथ कई संस्कृतियों को सम्मिलित किया गया है,लेकिन यदि वर्तमान में गहराई से देखें तो यह पर्व भारतीय संस्कृति को अपने में इस तरह समाहित किए है कि किसी भी कोण से इसको भारत और भारतीयता से अलग करके देखा ही नहीं जा सकता।

इस पर्व को लेकर कई लोककथाएं भी संदर्भ रूप में मिलती हैं। आसाम में एक लोककथा है कि पृथ्वी की बेटी बोरदोईसिला ने कहीं दूर देश में शादी कर ली थी और जब वह बसंत ऋतु में मायके आई थी तो उसका उत्साह तेज हवाओं और तूफान की तरह था,उसके आगमन की खुशी के प्रतीक रूप में भी इस पर्व को मनाया जाता है।

बोडो भाषा में बोर्डोई और सिखला दो शब्द हैं जिनका शाब्दिक अर्थ है तूफ़ान की बेटी,आज भी बोहाग बिहू के आसपास जब आंधी और तूफ़ान की तरह हवाएं चलती हैं तो अंदाजा लगा लेते हैं कि बोरदोईसिला मायके आई है और बोहाग बिहू आ गया है।

इस अवसर पर बोडो और कछारी लोग आनंदित होकर नृत्य करते हैं। इस पर्व से संबंधित कई अन्य संदर्भ भी काफ़ी महत्व रखते हैं,चुटिया राजा लक्ष्मीनारायण के समय के ताम्रपत्रीय शिलालेख में उल्लेखित मिलता है कि राजा ने इस पर्व पर काफ़ी दान आदि किया, यह शिलालेख असम के उत्तर लखीमपुर में घिलामारा में आज भी मौजूद है, वहीं दूसरी ओर देवदायी बुरांजी में बिहू पर्व का विवरण दिया गया है, साथ ही आहोम राजाओं का भी विवरण दिया गया है। अगर आहोम शासकों के दौर में देखें तो पाएंगे कि उन्होंने यद्यपि बिहू पर्व को लेकर कुछ अतिरिक्त नहीं किया, क्योंकि इस पर्व को वे अपने परंपरागत पर्व या पूजा अर्चना जिसको वे पोइन-चम-न्याम से ही जोड़कर देखते रहे, आगे चलकर अपने शासन काल में आहोम राजाओं ने इस पर्व को पाइन-हू नाम भी दिया।

समय के अंतराल के साथ पूर्वोत्तर की मूल संस्कृति और प्रवजित संस्कृतियों के सम्मिलन का प्रभाव भी वर्तमान में यहां के पर्वों और अन्य संस्कारों में महसूस किया जा सकता है। बिहू पर्व इससे अछूता नहीं है। बिहू असम में मनाया जाने वाला एक अत्यधिक लोकप्रिय त्योहार है। वर्ष में बिहू पर्व तीन बार तीन भिन्न-भिन्न रूपों में मनाया जाता हैं। वैशाख में बोहाग बिहू, कार्तिक में काटी या कती बिहू या (कार्तिक माह में मनाया जाने वाला बिहू) और माघ महीने में माघ बिहू मनाया जाता है।

अंततः मैं यह कहना चाहूंगा कि पूर्वोत्तर में शायद बिहू ही विशेष रूप से असम का एकमात्र ऐसा पर्व है जो किसी जाति विशेष का न होकर संपूर्ण आसमीया संस्कृति, असमीया चेतना तथा आसमीया जाति का एकमात्र जातीय पर्व है, जिसमें कोई जाति नहीं सभी जातियों को बिना किसी भेद भाव के, बिना किसी प्रथकीकरण के स्वीकार किया जाता है मानव जाति को मात्र मानव रूप में अंगीकार किया जाता है, आतमीय भाव से अपनाया जाता है, इस पर्व का सीधा संबंध मानवों से है,असम के प्रत्येक असमीया जन से है,जो प्रसंशनीय भी है और विचारणीय भी, क्योंकि यह पर्व सबको एक परिवार की संज्ञा प्रदान करता है, समरसता, समानता और तथाकथित जातिवादी मानसिकता तथा सोच से ऊपर उठकर एक समन्वयवादी संस्कृति को जन्म देता है। समस्त जातियों के आस्तित्व के होने के बाद भी असम एक ऐसा राज्य है जहां आपको यह महसूस ही नहीं होगा कि आपको या आपकी संस्कृति को कोई जाति या कोई अन्य संस्कृति अतिक्रमित कर रही, इसके पीछे लोगों को संस्कृतियों को आपस में बांधने का कार्य इन पर्वों ने और उनके आनंदवादी सोच ने ही किया है। यही कारण है कि बिहू जैसा पर्व आज असमीया संस्कृति की पहचान बन कर ही नहीं उभरा है अपितु असम की तमाम जातियों को एक सूत्र में पिरोने वाला जातीय पर्व बन कर उभरा है।

जब जानकी मंदिर के लिए भगवान राम- लक्ष्मण स्वयं प्रकटे

तमिलनाडु के चेंगलपट्टु जनपद के मदुरंथकम शहर में स्थित एरी-कथा रामर मंदिर दक्षिण के सर्वाधिक पुराने राम मंदिरों में से है। मंदिर पल्लव शासकों द्वारा करीब 16 सौ वर्ष पूर्व निर्मित माना जाता है। मंदिर में भगवान राम, लक्ष्मण और सीता की मूर्तियां विराजमान हैं। यह मंदिर एक विशालकाय झील (जलाशय) के किनारे स्थित है। यह झील तेरह वर्ग मील (करीब 34 वर्ग किमी) में फैली हुई है। इसकी गहराई करीब 21 फिट है। इतिहास के मुताबिक चोल राजाओं ने भी इस मंदिर को दिव्यता-भव्यता प्रदान की। चोल राजाओं के शिलालेख आज भी मंदिर में देखने को मिलते हैं। सदियों पुराने राम मंदिर के नाम में 'एरी-कथा' शब्द जुड़ने की रोचक कथा पूरे तमिलनाडु में प्रचलित है।

1795 और 1799 के बीच चेंगलपट्टु जिले का कलेक्टर कर्नल लियोनेल ब्लेज नामक एक ब्रिटिश अधिकारी था। अपने कार्यकाल में ब्लेज ने विशाल जलाशय में दो बार दरारें देखीं। उसे अंदेशा हुआ कि मूसलाधार बारिश से जलाशय का तटबंध टूट सकता है। जनहानि बचाने के लिए वर्ष 1798 में कलेक्टर ने मदुरंथकम में डेरा डाला। वह ऐसी खोज में थे कि बांध में दरार आते ही तत्काल मरम्मत की जा सके। कहा जाता है कि निरीक्षण के दौरान उन्हें राम मंदिर परिसर में ग्रेनाइट और अन्य पत्थर बड़ी संख्या में दिखे। यह पत्थर जनकवल्ली (जानकी) थयार मंदिर निर्माण के लिए एकत्र किए गए थे,लेकिन धन की कमी से निर्माण प्रारंभ नहीं हो पाया था। उसने सोचा कि इनका उपयोग तटबंध के जीर्णोद्धार में किया जा सकता है। यह सुनकर मंदिर के पुजारियों ने कहा कि पत्थर जनकवल्ली थायार मंदिर के लिए हैं। यह सुनकर कलेक्टर ने टिप्पणी की कि एक अलग मंदिर की क्या आवश्यकता? कहते हैं कि कलेक्टर ने मजाक में पुजारियों से यह भी कहा कि भगवान जलाशय की रक्षा क्यों नहीं कर पाते? पुजारियों ने कहा कि भगवान हमेशा दिल से की गई सच्ची प्रार्थना स्वीकार करते हैं। उस वर्ष मूसलाधार बारिश हुई। कुछ ही दिनों में जलाशय पूरी तरह भर गया। चिंतित कलेक्टर ने जलाशय के पास डेरा डाल दिया ताकि बांध टूटने पर तत्काल मरम्मत कराई जा सके।

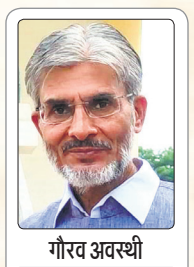

गौरव अवस्थी
रायबरेली

जनश्रुति है कि जलाशय के निरीक्षण करते वक्त ही कलेक्टर कर्नल ब्लेज को चमत्कारी दृश्य दिखा। उसने दो योद्धाओं को धनुष और तरकश लिए बांध की रक्षा करते देखा। यह देखकर ब्रिटिश अधिकारी अपने घुटनों पर बैठ गया और प्रार्थना करने लगा। उसे विश्वास हो गया कि यह कोई और नहीं, बल्कि भगवान राम और उनके भाई लक्ष्मण ही थे।

यह भी आश्चर्यचकित करने वाली बात थी कि कलेक्टर के किसी भी अनुचर में यह दृश्य नहीं दिखा। थोड़ी ही देर बाद वह दृश्य उसकी दृष्टि से ओझल हो गया और अचानक बारिश भी रुक गई। इसके बाद कलेक्टर ने जनकवल्ली थायार के लिए मंदिर के निर्माण का कार्य स्वयं कराया। तभी से यह राम मंदिर एरी कथा रामर (राम जिन्होंने जलाशय (एरी) को बचाया) मंदिर के नाम से जाना जाने लगा। कलेक्टर के नाम के साथ भगवान राम को परोपकारी बताने वाला शिलालेख आज भी मदुरंथकम मंदिर में मौजूद है।

इतिहास के झरोखे से

पंचाल राज्य का गौरवशाली इतिहास

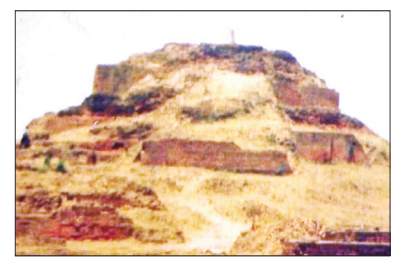

प्रो. गिरिराज नन्दन
इतिहासकार, आंवला, बरेली

कांपिल्य में द्रौपदी स्वयंवर

राजा द्रुपद के समय पंचाल विशेष रूप से समुन्नत जनपद था। पुनः हम द्रुपवपुर काम्पिल्य को एक विशेष ऐतिहासिक घटना से संबद्ध पाते हैं। जब पांडवों को बनवास हो गया था तो उसी बीच द्रुपद की (पांचाली) का स्वयंवर हुआ। उस महोत्सव में कितने ही प्रदेशों के राजा एकत्र हुए थे। मत्स्य-भेदन के पश्चात् द्रौपदी का विवाह अर्जुन के साथ हुआ। इस घटना विशेष का महाभारत काल में एक विशिष्ट स्थान है। महाभारत में इस महोत्सव का वर्णन विशेष रूप में मिलता है।

जरासंध का पंचाल में आतंक-महाभारत काल में ही एक वार्हदभ वंशी जरासंध ने पांचाल जनपद में इतना आतंक उत्पन्न कर दिया था कि पंचाल निवास सहस्त्रों की संख्या में अपना घर छोड़कर इधर-उधर बिखर गए थे। (महाभारत सभा पर्व अ. 14) किंतु जब जरासंध को भीम ने मार दिया तो पंचाल निवासियों ने महाभारत के युद्ध में पांडवों का भरपूर साथ दिया।

महाभारत युद्ध में दक्षिण एवं उत्तरी पंचाल का भाग लेना-पौरब राज धृष्टराष्ट्र के पुत्र कौरवों तथा पांडु के पुत्र पांडवों में वैमनस्य के कारण महाभारत युद्ध हुआ। उत्तर पंचाल के शासक दोण ने अपने पुत्र अश्वत्थामा के साथ कौरवों का पक्ष लिया तथा ग्यारहवें दिन से पन्द्रहवें दिन तक द्रोणाचार्य कौरवों की सेना के सर्वोच्च सेनापति रहे। दक्षिण पंचाल के द्रुपद ने दोण के विरुद्ध पांडवों की सहायता की। द्रुपद की पुत्री द्रौपदी पांडवों को ब्याही गई थी और इस प्रकार पांडवों के साथ द्रुपद का घनिष्ठ संबंध स्थापित हो गया था। द्रौपदी के विषय में कहा जाता है कि यह यज्ञ-कुंड से अपने भाई धृष्टद्युम्न के साथ पैदा हुई थी। यह कुंड कंपिल में 'द्रौपदी कुंड' नाम से आज तक प्रसिद्ध है।

पांडवों को महाभारत युद्ध में द्रुपद तथा घुष्टद्युम्न से बड़ी सहायता मिली। उसने पांडवों की सेना को व्यवस्थित किया। वही इस विशाल सेना का सेनापति बनाया गया। ऐसा प्रतीत होता है कि धृष्टद्युम्न को व्यूह रचना का अच्छा ज्ञान था। द्रुपद के दूसरे पुत्र शिखंडी के विषय में प्रसिद्ध है कि किस प्रकार अर्जुन ने उसके क्लैक्य का लाभ उठाकर भीष्म को पराजित किया। महाभारत युद्ध में पांडवों की विजय तो हुई, पर उसमें कितने ही जनपदों के शासक नष्ट हो गए। द्रोण, द्रुपद और धृष्टद्युम्न भी मारे गए। केवल द्रोण का पुत्र अश्वस्त्थामा बच गया। उसने एक रात को चोरी से द्रौपदी के पुत्रों को वध कर दिया। वह पकड़ा गया, परंतु अंत में अपमानित कर छोड़ दिया गया और उसके बाद उसका कुछ पता नहीं चला।

अहिच्छत्र का राजा आदि- द्रुपद से उत्तरी पंचाल अर्थात् अहिच्छत्र का राज्य छीनने के बाद द्रोण अथवा उनके पुत्र अश्वस्त्थामा ने अहिच्छत्र पर सीधा राज्य (शासन) नहीं किया। आंवला तहसील के सिरौली परगने के गुरुगांव के बारे में गुरु द्रोणाचार्य से जुड़ा होने की अनुश्रुति है। लीलौर गांव भी उसी समय का कहा जाता है। क्षेत्रीय जनश्रुतियों के अनुसार अहिच्छत्र नगर तथा यहां का विशाल किला एवं आदि सागर, राजा आदि से संबंधित बताया जाता है। उसके बारे में प्रसिद्ध है कि जब वह सोया हुआ था तब एक सर्प उस पर छाया कर रहा था। इसे देखकर गुरु द्रोणाचार्य ने उसके राजा होने की भविष्यवाणी की थी। यह राजा अहीर था। अहिच्छत्र का किला भी इसी आधार पर आदि कोट - आदि क्षेत्र-अथवा अहिच्छत्र कहलाता है। गुरुगांव ग्राम में अहीर जाति के लोग बहुत रहते हैं तथा अपने को राजा आदि का वंशज बताते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि द्रोणाचार्य की ओर से आदि यहां का प्रशासक था। द्रोणाचार्य की मृत्यु के बाद तथा अश्वस्त्थामा के लोप होने के कारण आदि को राजपद प्राप्त हो गया तथा उसने अहिच्छत्र पर राज्य किया। संभवतः उसके बाद उसके वंशजों का भी यहां राज्य रहा हो।

कानपुर का श्रीरामलला मंदिर

रावतपुर कानपुर नगर के पश्चिम में 2621 अक्षांश तथा 8017 देशांतर रेखा के मध्य स्थित है। सन् 1844 में रावतपुर का क्षेत्रफल 11 एकड़ और जनसंख्या 4316 थी। चंदेल वंश के सपई के राव सुमेरशाह ने अपने छोटे भाई रामशाह को रावत की उपाधि के साथ 48 गांव देकर रावतपुर में बसाया। काकादेव का वंश इसी वंश की शाखा है। बाद में ये सभी गांव काकादेव वंश को मिल गए। रावतपुर के चंदेल वंश में रामशाह के बाद भीखमशाह, मनियरसिंह, सिंहराय, जसकरन, खेमकरन, कल्यानसिंह, शरजीत सिंह, विक्रमजीत, खड़गराय, खांडेराय , कल्यानसिंह (द्वितीय), भगवंतसिंह, गिरधरसिंह, घनश्याम सिंह, रणधीर सिंह, शिवसिंह रावत हुए।

अनूप कुमार शुक्ल
महासचिव इतिहास समिति, कानपुर

रावत रणधीर सिंह का बेटा शिव सिंह था। सन् 1872 में रणधीर सिंह और उसके पांच दिन बाद शिव सिंह का निधन हो गया। कोई संतान न होने के कारण सन् 1873 मे संपत्ति व इलाका कोर्ट ऑफ वार्डस के सुपुर्द हो गया। विधवाओं ने वंश के एक लड़के को गोद लेने का निश्चय किया,पर गोद लेने से पहले वह चल बसा। इसके बाद रानी बघेलन ने शिवरतन सिंह को गोद ले लिया गया। बाद में रानी बघेलन व शिवरतन सिंह और बघेलन की सास रानी जनवारिन के बीच दीवानी में मुकदमा चला और अंत में जायदाद ठाकुर जी के मंदिर में लगा दी गई। मंदिर में लगे प्रस्तर पट्ट के मुताबिक :- श्रीमती रौताइन बघेलिन धर्मपत्नी श्री रावत शिवसिंह ने इस मंदिर का निर्माण कराया एवं श्री ठाकुर रामलला जी महाराज की प्रतिष्ठा कराकर अपनी संपूर्ण संपत्ति सरकारी लिखा पढ़ी द्वारा 13 दिसंबर सन् 1815 ई० को श्री ठाकुर जी महाराज को अर्पित की। रावतपुर ट्रस्ट, कानपुर उन्नीसवीं शती में रावतपुर गांव कानपुर के रावत शिव सिंह की रानी रौताइन बघेलन भी चौदहवीं शती के ओरछा के राजा मधुकर शाह की रानी गणेश कुंवरि की भांति प्रभु श्री राम की अनन्य भक्ति भाव रखती थीं,वह श्रीराम के बाल स्वरूप की उपासक थीं। इसीलिए श्रीरामलला मंदिर में प्रभु श्रीराम का बाल स्वरूप रामलला को विराजित कराया। कानपुर के लिए यह गौरव की बात है कि कानपुर में श्रीराम का बाल स्वरूप श्री रामलला जी का मंदिर, रावतपुर गांव, कानपुर में प्रतिष्ठित है। मंदिर के साथ संस्कृत पाठशाला और श्री रामलला इंटर कॉलेज भी संचालित है।

विजय मंदिर और आलमगीरी मस्जिद

विजय मंदिर परमार राजाओं द्वारा बनवाया गया। विजय मंदिर देवी चर्चिका को समर्पित था। अभिलेख में परमार शासक नर बर्मन का भी उल्लेख मिलता है। ऐसा माना जाता है कि देवी चर्चिका का एक अन्य नाम विजया भी था और इसी वजह से इस मंदिर को विजय मंदिर की पहचान मिली।

सुमन दिसु तंवर
नई दिल्ली

औरंगजेब ने इस मंदिर को तोपों से उड़ाकर इस पर एक मस्जिद का निर्माण कर दिया था। सदियों पहले ही किस तरह से इसको ध्वस्त किया गया था। किस विध्वंसकारी सोच के तहत यहां मंदिर को जमीदोंज किया गया होगा। उसने इस मस्जिद का नाम अलमगीरी मस्जिद रखकर, विदिशा का नाम भी आलमगीरी कर दिया था। औरंगज़ेब ने जब बीजा मंडल मंदिर को ध्वस्त किया था तब उसने यहीं पर एक मस्जिद का निर्माण भी कर दिया था। मंदिर के ऊपर बनी मस्जिद तो अब नहीं है,लेकिन वह चार पिलर यहां जरूर खड़े हैं जिन पर मस्जिद का निर्माण किया गया था। हालांकि कालांतर में न तो वह मस्जिद बची है और न ही आलमगीरी नाम बचा है। साल 1991 की एक रात यहां भीषण बारिश हुई, तब मंदिर के उत्तरी किनारे की मिट्टी भरभराकर दरक गई। तब अंदर से कुछ प्राचीन मूर्तियां नजर आईं। अगर उस बारिश ने सच सामने न लाया होता तो शायद आज इतिहास कुछ और होता।

मुगल साम्राज्य के पतन की अवधारणाएं

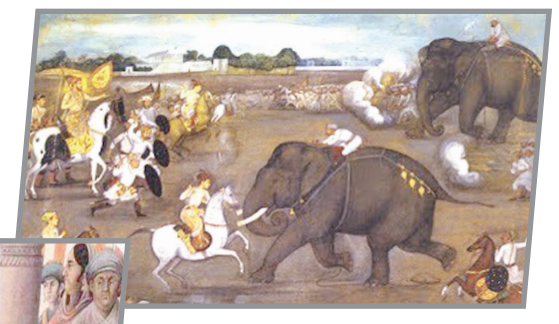

औरंगजेब आलमगीर को इतिहासकार ओवन ने "इंसाफ का दरिया" कहकर उच्चारित किया था। यह कहा जाता है कि बादशाह न्याय करने में बहुत उत्सुक रहता था और पल भर में बड़े से बड़े मामले निपटा देता था,किंतु उसकी नीतियों ने पूरे मुगल साम्राज्य के सामने जीवन और मृत्यु का प्रश्न खड़ा कर दिया। पाश्चात्य इतिहासकार मानते हैं कि भारत एक खंड राज्य है,जहां तमाम संप्रभु इकाइयां सहअस्तित्व से चलती हैं। केंद्र तभी तक सफल हैं,जब इन इकाइयों की संप्रभुता का सम्मान करें। बादशाह औरंगजेब ने अकबर की उस नीति को पूरी तरह से पलट दिया था जिसमें राजपूतों, इत्यादि इकाइयों को अपने-अपने वतन में स्वतंत्र शासन की अनुमति दी गई थी। आलमगीर का सपना पूरे भारत पर नियंत्रण करने का था,जो असफल सिद्ध रहा।

यह सही बात है कि उसके जीवन के अंतिम काल में ही स्थितियां उसके हाथों से निकल चुकी थीं। एक रोज जब एक बूढ़ी औरत बादशाह के सामने फरियाद लेकर आई तो भरे दरबार में बादशाह ने उससे कहा "ए बुढ़िया जा और दुआ कर कि खुदा अब दूसरे बादशाह को भेजे"। मुगल जो एक सौ पिछत्तर साल तक विश्व का सबसे धनी परिवार थे और जिन्होंने ताजमहल जैसी इमारतों को बनवाया,उनके परिवारों में हालात यह हो गए कि एक बार परिवार में राशन ही न रहा और सात दिन तक हरम की औरतें भूखे पेट पड़ी रहीं और सातवें दिन किले के दरवाजे खोलकर दिल्ली की सड़कों पर आ गईं। मुगलों का पतन क्यों हुआ इस पर इतिहासकारों ने औरंगजेब की धार्मिक नीतियों को कारण ठहराया,किंतु यह केवल कैंब्रिज इतिहासकारों का अनुसरण मात्र था जिनके अपने औपनिवेशिक स्वार्थ थे। विगत वर्षों में इस प्रश्न का उत्तर और गहराई मार्क्सवादी आर्थिक आधारों पर ढूंढने की कोशिश हुई। यह भी तथ्य है कि जो वर्ष मुगल सल्तनत के पतन के थे,उन्हीं वर्षों में एशिया के तमाम बड़े समराजयो ओटोमन, सफाविद, उज्बेकखानी का पतन शुरू हो गया था।

डॉ.विकास खुराना
शाहजहांपुर

अतहर अली लिखते हैं कि दरअसल विदेशी कंपनियों के एशिया में आने और उनके द्वारा मॉल की भारी खरीद ने एशियाई मुल्कों जिसमें भारत भी शामिल था में वस्तुओं के दाम हद से ज्यादा बढ़ा दिए। राज्य की आय कम पड़ने लगी जिसका निवारण केंद्रीकृत शासन से किए जाने के प्रयास हुए फलस्वरूप सिख, जाट, सतनामी विद्रोह उठ खड़े हुए। दक्षिण की जमीन पर कब्जे की नियत ने मुगलों को अनवरत मराठों के संघर्ष से उलझा दिया। यह भी तथ्य है कि जहां यूरोप पुनर्जागरण से गुजर कर वैज्ञानिक ढंग की शिक्षा और जीवनशैली के अभ्यास में था। भारत में परंपरागत धर्म शिक्षा जिसमें कुरान की आयतों का स्मरण किया जाना सर्वोपरि था में तर्क और गणित की शिक्षा का लोप उजागर हुआ। मुगल जो ताजमहल जैसी इमारत बना रहे थे, तोपखानों के आधुनिकीकरण से मरहूम रहे और जब इनकी लड़ाई कंपनी की छोटी-छोटी फौजों से हुई कमी जगजाहिर हो गई। बड़ी से बड़ी भारतीय फौजें मुट्ठीभर कंपनियों की सेनाओं को नहीं हरा पाई। सेंट टोमें का युद्ध इसका बेहतरीन उदाहरण है। कर्नाटक में अद्यार नदी के तट पर यह युद्ध दो सौ दस फ्रांसीसी सैनिकों तथा दस हजार की नवाब अवरुद्दीन की फौज के मध्य लड़ा गया,इसमें फ्रांसीसी विजित रहे। इसी प्रकार बक्सर के युद्ध में बादशाह और उसके सहयोगियों की सेना पचास हजार थी,किंतु वे हैक्टर मुनरो की चार हजार की सेना को नहीं हरा सके। शेख अहमद सरहिंदी जैसे उलेमा गणित और विज्ञान की शिक्षा के विरुद्ध थे,समाज के पतन में इसकी भूमिका स्पष्ट थी। मुगलों का पतन वस्तुतः बादशाह आलमगीर की दक्षिण विजय,उसकी राजपूत नीति का स्पष्ट प्रभाव था।

आधुनिक इतिहासकार जागीरदारी के संकट को इसकी उपज मानते है। औरंगजेब की तथाकथित धर्मनीति,हिंदू विरोधी नीति का मनोविज्ञान क्या था और उसने साम्राज्य की जड़ों पर कैसे प्रहार किया,वर्तमान अनुसंधानों में इसकी प्रासंगिकता कितनी रही, इसकी चर्चा अगले खंड में की जाएगी। संक्षेप में यह समझ लेना उचित है कि रूसी और अमेरिकी इतिहासकारों द्वारा भारत में अनेक राष्ट्रीयताओं के उदय तथा कैंब्रिज इतिहासकारों की औरंगजेब को जिंदा दैत्य बताने की अवधारणाओं और घोषणाओं के दावे अनुसंधानों में मिथक सिद्ध हुए और आम जनमानस को उसके बारे में जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है ताकि स्वर्णिम भारत का निर्माण हो सके।

लोकगीतों में सीता की भाव-भंगिमा और व्यवहार

राम की समर्पित पत्नी के रूप में सीता ने आदर्श पत्नी का जो प्रतिमान प्रस्तुत किया है वह बेजोड़ है। इस चरित्र ने धर्मशास्त्रीय निदर्श में प्रस्तुत आदर्श पत्नी की परिकल्पना को जीवंत कर दिया और भारतीय समाज के समक्ष स्त्री/पत्नी सुलभ आचरण का मानक प्रस्तुत किया। पतिव्रता सीता की इस लोकप्रियता ने उसे लोक संपदा का अभिन्न अंग बना दिया। भारत के हर कोने से हमें सीता के आख्यान पर आधारित लोकगीत मिलते हैं। भोजपुरी और अवधी लोकगीत सीता की जो तस्वीर खींचते हैं। वह रामायण की सीता से विरोधाभास रखती है। वाल्मीकि की सीता यदा-कदा बहुत कम बोलती हैं। यही स्थिति रामायण की अन्य स्त्रियों की है। स्त्रियों का यह व्यवहार पितृवंशीय-पितृसत्तात्मक समाज के अनुकूल है। वाल्मीकि रामायण की तुलना में भोजपुरी-अवधी लोकगीतों की सीता अधिक मुखर और आग्रही हैं। वह अधिक मानवीय, जीवंत और सक्रिय हैं, वह हाड़-मांस की एक अधिक वास्तविक स्त्री की छवि प्रस्तुत करती हैं,जो रामायण में अनुपस्थित है।

डॉ. नीलिमा पांडेय
प्रोफेसर, लखनऊ विश्वविद्यालय

वाल्मीकि रामायण में पहली बार हम सीता से जनक की पुत्री के रूप में परोक्ष रूप से मिलते हैं। यहां सीता एक सुंदर शीलवान कन्या के रूप में सामने आती हैं, जो स्वयं के विवाह,उससे जुड़ी प्रतिज्ञा आदि पर अपने पालक पिता जनक से कोई प्रश्न नहीं करती हैं। ऐसा करना स्त्रियोचित व्यवहार की अपेक्षित शालीनता और मर्यादा के अनुरूप है। लोकगीतों में भी सीता के विवाह के संदर्भ हैं। वाल्मीकि के विपरीत इन गीतों में सीता एक ऐसी नवयुवती के रूप में चित्रित हैं,जो अपने दूल्हे को लेकर उत्सुक हैं। विवाह से जुड़ी इच्छाएं और अपेक्षाएं कभी उसे उल्लास से भरती हैं तो कभी निराश करती हैं। लोकगीतों में सीता की जो भंगिमा और व्यवहार दर्शाया गया है,वह सीता की परंपरागत छवि के प्रतिकूल हैं।

सीता के आख्यान में स्वयंवर के अलावा उनका रावण के द्वारा अपहरण और अग्निपरीक्षा सर्वाधिक चर्चित प्रसंग हैं। लोकगीतों में सीता के हरण की चर्चा लगभग अनुपस्थिति है। ऐसा प्रासंगिक भी है। अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में स्त्रियां इस प्रसंग से कोई सहसंबंध स्थापित नहीं कर पातीं। इसलिए इस विषय पर न तो उन्होनें गीत गढ़े न ही उन्हें गाती हैं।

सीता के निष्कासन और अग्निपरीक्षा का प्रसंग स्त्रियों को सर्वाधिक आतंकित करता है। इसकी अभिव्यक्ति अनेकानेक लोकगीतों में मिलती है। स्त्रियां सीता को परित्यक्त करने के अपराध में राम को लगभग अस्वीकार कर देती हैं। राम के इस कृत्य के लिए उनके मन में कड़वाहट है। वे उन्हें पापी और निष्ठुर कहकर संबोधित करती हैं और उनके इस निर्णय को अनैतिक बताती हैं। धरती माता की गोद में लौट जाने का रूपक इन्हीं गीतों में इस्तेमाल किया गया है।

अवधी का एक गीत कहता है-

'राम निर्मोहिया कै मुंहवा जियत नाही देखबै हो'

दूसरे में ये उद्गार हैं-

फाटहु धरती! हो फाटहु धरती, धरती गयब होई जाऊं,ऐसे पुरुखवा कै मुंहवा न देखौं, गरभै दिहिस बनवास'।

धरती में समा जानें का रूपक स्त्रियों के दुनियावी और व्यवहारिक अनुभवों को रेखांकित करता है। हमारे समाज में स्त्री के चरित्र पर लगा दाग उसकी मृत्यु के साथ ही मिटता है। स्त्री को समाज के द्वारा तय की गई विभिन्न कसौटियों पर खरा उतरकर अपने चरित्र का प्रमाण देना होता है। चरित्रहीन स्त्री पितृसत्तामक समाज के लिए चुनौती मानी जाती है। पुरुष की प्रधानता को प्रमाणित करने के लिए यह जरूरी है कि ऐसी स्त्री को विभिन्न कसौटियों के माध्यम से नियंत्रित किया जाए।

इन लोकगीतों के माध्यम से स्त्रियां अपना प्रतिरोध दर्ज कराती हैं। अफसोस इस बात का है कि उनका ये प्रतिरोध पितृसत्ता की चौहद्दी से टकराकर लौट आता है। लगभग सभी गीतों में पति (राम) के द्वारा नकार दी गई पत्नी (सीता) अपने जीवन को समाप्त कर देने की इच्छा जताती है अथवा ऐसा कर गुजरती है। किसी भी गीत में लांछित स्त्री (सीता) पति (राम) को चुनौती दे स्वतंत्र और आत्मनिर्भर जीवन की तरफ कदम बढ़ाती नहीं दिखती।

ऐतिहासिक रूप से माना जाता है कि वाल्मीकि ने जिस समय अपने काव्य की रचना की उस समय बौद्ध धर्म अपने उरूज पर था और नैतिक मूल्यों का पाठ पढ़ाता हुआ ब्रह्मचर्य और संन्यास पर बल दे रहा था। वाल्मीकि का काव्य इससे उलट था। उसका रुझान सांसारिक जीवन पर था। इसमें पारिवारिक जीवन का बखान था। पारिवारिक संबंधों के आदर्श रूप प्रस्तुत किए गए थे। माता-पिता, भ्राता, पत्नी, पुत्र, मित्र सभी अपने आदर्शतम रूप में वाल्मीकि के काव्य में मिलते हैं, जो अनुकरणीय हैं, प्रशंसनीय हैं जिनका महिमामंडन करते हुए वाल्मीकि अघाते नहीं हैं। यह एक ऐसी मोहक गाथा है,जो अपनी नाटकीयता से न सिर्फ हमें द्रवित करती है,बल्कि रिझा-रिझा कर उर में समा जाती है।

यह वर्णव्यवस्था पर आधारित पितृसत्तात्मक समाज के ढांचे पर विकसित एक बेहद मोहक काव्य है,जो बड़ी ही कुशलता के साथ पितृसत्तात्मक मूल्यों की बुनियाद रखता है। उन्हें लोकप्रिय बनाता है। इसका समय 300 ईसा पूर्व से 200 ईसवी के बीच का माना जाता है। अंतिम खंड जरूर प्रक्षिप्त हैं। बहरहाल 200 ईसवी के अंत तक हम वाल्मीकि के काव्य को जनमानस के पटल पर अंकित पाते हैं। उसकी लोकप्रियता में कोई संदेह नहीं बचता।

राम के नाम पर जनभावनाओं को आंदोलित करने का सिलसिला काफी पुराना है। आजाद भारत के तमाम किस्सों और मौकों से तो आप वाकिफ़ ही हैं। आजादी से पहले भी ऐसा होता रहा है। उपनिवेशिक काल में जब हिन्दुस्तान पर अंग्रेजी शासन था लाखों लोग समंदर से मजदूर के रूप में जहाज पर भेजे गए। इन्हें हम गिरमिटिया मजदूर के नाम से संबोधित करते हैं। इन्हें मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, कैरेबियन द्वीप आदि स्थानों पर भेजा गया।

सूरीनाम दक्षिणी अमेरिका में है। वहां भी जहाजी भेजे गए। अरकाटी ऐजेन्टों ने सूरीनाम का नाम 'सीरी राम' रखा। राम के संबोधन ने बहुतों को सूरीनाम जाने को प्रेरित किया। ये जानकारी हमें प्रवीण झा की 'कुली लाइंस' से मिलती है। अरकाटी ऐजेंट और संभावित मजदूर के बीच के संवाद को प्रवीण जी ने इस तरह उकेरा है : " चल सीरी राम देस! उहां सब कुछ मिली।"

"का बात कर रहे हो? सीरी राम?"

हां-हां! सीरी राम।"

"जय सीरी राम।"

इस तरह सूरीनाम को बरास्ते "सीरी राम" ढेरों मजदूर मिल गए। राम के नाम पर लोग जहाजभर कर चल दिए। इन मजदूरों को गिरमिटिया कहा गया। गिरमिट शब्द अंग्रेजी के 'एग्रीमेंट' शब्द का अपभ्रंश बताया जाता है।